A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 15 सितंबर, 2024

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 320 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)

subahsaverenews@gmailĐcom

facebookĐcom/subahsaverenews

wwwĐsubahsavereĐnews

twitterĐcom/subahsaverenews

आसमानी अतीत ... खजुराहो

फोटो- मणि मोहन

सुप्रभात

केवल ध्वनि ही नहीं लौटती
भाषा भी लौटती है फिर हमारे पास,
जैसी भाषा देते हैं हम
वैसी ही लौट कर आती है पुन:,
बोले गए शब्द पहुंचते हैं हम तक वैसे ही,
लिखे गए शब्द
अर्थवान होकर लौटते हैं फिर से,
इस आवाजाही में असंभव है यह
कि हम बोलें कुछ
और हम तक पहुंचे कुछ और।
इधर हो यह रहा है कि
हम बोल रहे हैं अंग्रेज़ी में
बच्चों को पढ़ा रहे हैं अंग्रेज़ी स्कूल में
हस्ताक्षर कर रहे हैं अंग्रेज़ी में
पत्र लिख रहे हैं अंग्रेज़ी में
विवाह आमंत्रण छपवा रहे हैं अंग्रेज़ी में
और उम्मीद कर रहे हैं
हमारी हिन्दी पहुंचे हम तक
उसका वैभव और बढ़े ,
कितना अजीब है न!

– आशीष दशोत्तर

फिर से अनहोनी

आसमान में होंगे दो चंद्रमा!

सितंबर से नवंबर तक पृथ्वी को मिलेगा नया मिनी मून

वॉशिंगटन (एजेंसी)। सौर मंडल में कई ग्रह हैं, जिनके एक से ज्यादा चंद्रमा होते हैं। शनि के तो 146 ज्ञात चंद्रमा हैं लेकिन पृथ्वी के पास एक ही चंद्रमा है। वैज्ञानिकों का कहना है कि जल्द ही एक अस्थायी मिनी मून हमें मिल सकता है। यानी तब पृथ्वी के पास कुछ समय के लिए दो चंद्रमा होंगे। यह एक दुर्लभ खगोलीय घटना होगी, जो पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण की ताकत दिखाएगा। लेकिन यह चंद्रमा ऐसा नहीं होगा, जैसा हम आसमान में देखते हैं। बल्कि यह एक एस्टेरॉयड के रूप में बहुत छोटा होगा।

मिनी-चंद्रमा बनाने वाले एस्टेरॉयड का नाम 2024 पीटी होगा। इस एस्टेरॉयड को 7 अगस्त 2024 को खोजा गया है। इसका व्यास लगभग 10 मीटर है। 29 सितंबर से 25 नवंबर कर के लिए इसे पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण पकड़ लेगा। इस दो महीने की अवधि के दौरान एस्टेरॉयड पृथ्वी का चक्कर लगाएगा लेकिन यह पृथ्वी की एक परिक्रमा नहीं कर पाएगा। 25 नवंबर 2024 के बाद यह पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से बाहर निकल जाएगा और एक बार फिर सूर्य की परिक्रमा करने लगेगा। अमेरिकन एस्ट्रोनॉमिकल सोसायटी की ओर से इससे जुड़ा पेपर प्रकाशित हुआ है, जिसमें शोधकर्ताओं ने निष्कर्षों का विवरण दिया। पेपर में लिखा है, नियर अर्थ ऑब्जेक्ट यानी पृथ्वी के निकट की वस्तुएं घोड़े के नाल जैसे पथ का अनुसरण करती हैं।

यह हमारे ग्रह के करीब और कम सापेक्ष वेग से पहुंचती है। तब मिनी-मून जैसी घटनाएं होती है। इस कारण एस्टेरॉयड की भूकेंद्रित ऊर्जा घंटों, दिनों या महीनों के लिए नकारात्मक हो जाती है। लेकिन चक्कर पूरा किए बिना वह अपने रास्ते पर निकल जाती हैं। एस्टेरॉयड 2024 पीटी 5 पृथ्वी के समान कक्षाओं वाली नियर अर्थ ऑब्जेक्ट का हिस्सा है। इस एस्टेरॉयड का अपेक्षाकृत कम वेग और पृथ्वी के करीब आना गुरुत्वाकर्षण को अस्थायी रूप से इसका रास्ता बदलने की इजाजत देगा। इससे एक लघु चंद्रमा बन जाएगा। पहले भी पृथ्वी के लघु चंद्रमा रहे हैं। 2024 पीटी नग्न आंखों या ज्यादार छोटे टेलीस्कोप से देखने के लिए बहुत धुंधला होगा। इसके प्रकार की तीव्रता 22 होगी जो उन्नत ऑब्जर्वेटरी में ही दिखेगा। वैज्ञानिके इसे नियर अर्थ ऑब्जेक्ट की स्टडी के लिहाज से सुनहरा मौका मान रहे हैं।

कश्मीर का चुनाव तीन खानदानों और नौजवानों के बीच है

डोडा रैली में बोले प्रधानमंत्री मोदी-कांग्रेस सरकार के गृहमंत्री लाल चौक जाने से डरते थे

- जम्मू-कश्मीर को तीन खानदानों ने किया बर्बाद, ये हैं पीडीपी, कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस

श्रीनगर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव प्रचार के लिए डोडा पहुंचे। यहां स्पोर्ट्स स्टेडियम में मोदी ने 45 मिनट की स्पीच दी। इस दौरान पीएम मोदी ने परिवारवाद, आतंकवाद, पत्थरबाजी, कश्मीरी पंडित और आर्टिकल 370 जैसे मुद्दों पर जनता को संबोधित किया। पीएम ने कहा- जम्मू-कश्मीर को कांग्रेस, नेशनल कॉन्फ्रेंस और पीडीपी खानदान ने बर्बाद किया। इन तीन खानदानों ने मिलकर आपके साथ जो किया, वो किसी पाप से कम नहीं है। तीनों खानदान जम्मू-कश्मीर को दशकों तक बर्बादी देने के जिम्मेदार हैं। हम और आप मिलकर एक सुरक्षित कश्मीर का निर्माण करेंगे, ये मोदी की गारंटी है। वहीं मोदी ने हाल ही में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के बयान पर पलटवार करते हुए कहा- ये कहते हैं अगर 20 सीटें और आतीं तो मोदी समेत सभी नेता जेल में होते। आपको नेताओं को जेल भेजने के लिए सरकार बनानी है, या लोगों के भले के लिए। इस रैली के जरिए मोदी ने चिनाब घाटी के तीन जिलों, डोडा, किश्तवाड़ और रामबन की 8 विधानसभा सीटों को साधा।

कश्मीरी पंडितों पर

मोदी बोले- भाजपा ने कश्मीरी पंडितों के लिए आवाज उठाई

कश्मीरी पंडितों पर पीएम ने कहा- तीन दशक से ज्यादा हो गए, इसी दिन हमारे कश्मीरी पंडित टीका लाल टपलू को आतंकवादियों ने शहीद किया था। उनकी हत्या के बाद कश्मीरी पंडितों के साथ अत्याचार का अंतहीन सिलिसिला चला है। भाजपा ने कश्मीरी पंडितों के लिए आवाज उठाई, उनका साथ दिया। यहां मंच पर हमारी बेटी शगुन बैठी है। इनके पिता और चाचा दोनों को आतंकवादियों ने मार डाला था। अब भाजपा ने आतंकवाद पीड़ित इस बिटिया को टिकट दिया है। बेटी शगुन सिर्फ कैंडीडेट हैं, ऐसा नहीं है। ये आतंक को खत्म करने के भाजपा के मजबूत इरादों की जीती जागती तस्वीर है।

आतंकवाद पर: पुरानी सरकारों में गृहमंत्री तक लाल चौक जाने से डरते थे

पीएम ने कहा- जम्मू-कश्मीर में तीन खानदानों ने यहां अलगाववाद और आतंकवाद के लिए जमीन तैयार की। इसका फायदा किसने उठाया, देश के दुश्मनों ने। ये लोग आतंकवाद को इसलिए पालपोस रहे थे ताकि इनकी अरबों-खरबों की दुकान चलती रहे। इनके गुनाहों की वजह से हमारे बच्चों की जान चली गई। ये चंद्रभागा घाटी, ये सालों साल चले आतंकवाद के दौर की गवाह रही है। याद करिए वो समय, जब दिन ढलते ही यहां अघोषित कर्फ्यू लग जाता था। सारी दुकानदारी ठप, सारा कामकाज ठप। तब केंद्र सरकार के गृहमंत्री तक लालचौक जाने से डरते थे।

मुख्यमंत्री ने हिंदी दिवस पर 'राष्ट्रीय हिंदी भाषा सम्मान अलंकरण समारोह' में हिंदी सेवियों को किया सम्मानित

हिंदी ने एमपी में सुंदरता को अपनाया, भाषा का स्वाभिमान होना चाहिए: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

संस्कृति मंत्री बोले-बर्थडे पर फूंका-थूका केक खिलाते हैं

भोपाल (नप्र)। भोपाल के रवींद्र भवन में आयोजित राष्ट्रीय हिंदी भाषा सम्मान अलंकरण समारोह हुआ।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मौजूदगी में हुए कार्यक्रम में हिंदी भाषा के साहित्य सृजन में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए देश-दुनिया के प्रतिष्ठित लेखकों का सम्मान भी किया गया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा- भाषा का स्वाभिमान होना चाहिए। आजादी के पहले अंग्रेज और अंग्रेजियत ने जकड़ रखा था। जिससे पार पाने में आजादी के सैनानियों ने अपनी ताकत लगाई। अंग्रेजियत और अंग्रेज के बीच हिंदी को बढ़ावा देना कठिन काम है। भारत के माथे की बिंदी हमारी हिंदी है। हिंदू से हिंदी बनता है। उन्होंने कहा, अटलजी ने संयुक्त राष्ट संघ के अधिवेशन में हिंदी में भाषण देकर हिंदी का मान बढ़ाया था। अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विदेशी दौरे के दौरान अंग्रेजी बोलना आने के बाद भी अपनी मातृभाषा हिंदी में बोलते हैं।

संस्कृति मंत्री ने कहा कि बच्चों को लोग अंग्रेजी मीडियम में पढ़ा रहे हैं। उन्हें लगता है कि इससे बच्चों का उत्थान ज्यादा होगा। अब अंग्रेजी मीडियम में पढ़ने वाले बच्चे का जन्मदिन मनाने का तरीका बदल गया है। पहले अपने जन्मदिन पर बच्चा सुबह उठकर माता-पिता को प्रणाम करता था, और मंदिर जाता था। अब मोमबत्ती जलाकर उसे फूंककर बुझाता है। फिर फूंका और थूंका हुआ केक सबको खिलाते हैं। वहीं हिंदी भाषा के प्रयास से हम भारतीय संस्कृति, संस्कार, परंपरा और पूर्वजों के निकट आते हैं।

श्रीलंका की अतिला ने कहा–मुझे हिंदी से विश्व में पहचान मिली

राष्ट्रीय फादर कामिल बुल्के सम्मान-2022 से सम्मानित की गई श्रीलंका की अतिला कोतलावल ने हिंदी में ही अपना भाषण दिया। उन्होंने कहा कि मेरी मातृभाषा सिंहली है। दूसरी भाषा हिंदी सीखी है। मैं पिछले 24 साल से श्रीलंका में हिंदी का प्रचार-प्रसार कर रही हूं। हालांकि, हिंदी सिखाना बहुत बड़ी चुनौती थी, लेकिन भारत की मदद से मैं अपने काम में सफल हो पाई हूं। भोपाल को इतना साफ-सुथरा देखकर मुझे भोपाल से भी प्यार हो गया है। अब तक मुझे भारत और हिंदी से प्यार था।। हिंदी ने मुझे विश्व तक पहुंचाया है। इस वजह से मुझे जो कुछ मिला वह मैं बता नहीं सकती। इतने सारे लोगों से मैं बात कर पा रही हूं, यह सिर्फ हिंदी की वजह से है। उन्होंने कहा कि मैं यहां बच्चों से हिंदी में बात करती हूं तो वे अंग्रेजी में जवाब देते हैं। इस पर मैं बच्चों को हिंदी में बात करने का कहती हूं। मैं विदेशी होकर भी हिंदी को अपनाया है। हिंदी से आपकी पूरे विश्व में पहचान बन सकती है। मैं प्रधानमंत्री से मिलकर हिंदी में बात करना चाहती हूं। मैं बताना चाहती हूं कि हिंदी में बात करके कौन, कहां तक पहुंच सकता है। टोरंटो कनाडा से आई राष्ट्रीय निर्मल वर्मा सम्मान-2022 से सम्मानित डॉ. हंसा दीप ने कहा, हिंदी ने वैश्विक पटल पर बहुत तेजी से अपनी यात्रा जारी रखी है।

मेरठ में बड़ा हादसा

ढह गया तीन मंजिला मकान, मलबे में आठ लोग के दबे

मेरठ (एजेंसी)। मेरठ स्थित लोहिया नगर थाना क्षेत्र के जाकिर कॉलोनी गली नंबर सात में एक 50 साल पुराना तीन मंजिला मकान गिर गया है। बारिश के कारण एक जर्जर मकान ढह गया है। मकान गिरने के कारण पूरा परिवार अंदर मलबे में दबा हुआ था। मकान में आठ से ज्यादा लोगों के दबे होने की सूचना थी। मौके पर स्थानीय पुलिस और बचाव टीमें पहुंच गई थी मौके पर एसएसपी विपिन ताडा भी पहुंचे थे।

ज्ञानवापी ही विश्वनाथ धाम है, इसे मस्जिद कहना दुर्भाग्य

गोरखपुर विश्वविद्यालय में नाथ संप्रदाय के कार्यक्रम में बोले सीएम योगी

गोरखपुर (एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ज्ञानवापी विवाद को लेकर शनिवार को एक बार फिर अपनी बात रखी। गोरखपुर विश्वविद्यालय में नाथ पंथ पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में उन्होंने कहा कि दुर्भाग्य से उस ज्ञानवापी को आज लोग दूसरे शब्दों में मस्जिद कहते हैं लेकिन वास्तव में ज्ञानवापी साक्षात विश्वनाथ जी हैं। यही विश्वनाथ धाम है। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत के लिए अस्पृश्यता एक अभिशाप है। यह न केवल साधना के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा है बल्कि राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए भी सबसे बड़ी बाधा है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 36.3 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 15 सितंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

कुएं में मिले एक ही परिवार के चार शव

देवरानी-जेठानी लटकी मिली, नानी-नातिन की लाशें पानी में मिलीं

छोटे भाई की पत्नी ने सालभर पहले किया था सुसाइड

भागवती बाई | आरती | भारती | रोमिका

सागर (नप्र)। सागर में शनिवार सुबह कुएं में तीन महिलाओं और एक बच्ची का शव मिला है। इनमें दो महिलाएं फंदे पर लटकी मिलीं, जबकि बुजुर्ग महिला और बच्ची का शव पानी में मिला। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और चारों शवों को कुएं से निकलवाने के लिए एसडीईआरएफ की टीम को बुलाया गया। सभी शवों को निकाला जा चुका है। मामला देवरी थाना क्षेत्र के कोपरा गांव का है।

देवरी एसडीओपी शशिकांत सरयाम ने बताया कि महिलाओं की पहचान आरती लोधी (35), भारती लोधी (29), भागवती बाई (65) के रूप में हुई है। बच्ची का नाम रोमिका लोधी (6) है, जो भारती की बेटी थी। भारती और आरती रिश्ते में देवरानी-जेठानी थीं। नानी भागवती लोधी और नातिन रोमिका लोधी का शव पानी में मिला है। भागवती बाई भारती की मां थी।

पुलिस का कहना है कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत की वजह स्पष्ट हो सकेगी। जानकारी के मुताबिक साल भर पहले परिवार की छोटी बहू ने सुसाइड कर लिया था। इस मामले में पति सोनू और आरती का पति करोड़ी जेल में हैं। सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने कुएं से सभी शवों को बाहर निकलवाया।

साल भर पहले परिवार की छोटी बहू ने किया था सुसाइड- परिवार के सदस्य सुरेंद्र लोधी ने बताया कि सुबह करीब 10 बजे गांव के ही रहने वाले किशोर लोधी ने सूचना दी थी। इसके बाद सरपंच और पुलिस को बताया। हम और गांव वालों के साथ मौके पर पहुंचे। सुरेंद्र ने बताया कि एक साल पहले छोटे भाई सोनू लोधी की पत्नी ने जहर खाकर सुसाइड किया था।

मामले में पति सोनू अपने बड़े भाई के साथ जेल में है

मामले में पुलिस ने परिवार के सदस्यों के खिलाफ केस दर्ज किया था। इस मामले में सोनू और अपने बड़े भाई करोड़ी के साथ जेल में हैं। करोड़ी आरती का पति है। वहीं, भारती का पति किशोरी फरार है। सोनू के ससुराल वाले परिवार को लगातार परेशान कर रहे थे। आए दिन घर आकर धमकी देते थे। मारपीट और गाली-गलौज करते थे। शुक्रवार रात करीब 10 बजे भी घर आकर विवाद किया था। डर के मारे मैं रात में घर भी नहीं गया था।

पीएम आवास में गाय ने दिया बछिया को जन्म

मोदी ने नाम रखा दीपज्योति,वीडियो शेयर कर लिखा- इसके माथे पर ज्योति का चिह्न

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आवास में नन्हा मेहमान आया है। उन्होंने खुद सोशल मीडिया पर वीडियो साझा करते हुए बताया कि गौ माता ने बच्चे को जन्म दिया है। पीएम मोदी को उसका नामकरण 'दीपज्योति' किया है। पीएम मोदी ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि लोक कल्याण मार्ग पर प्रधानमंत्री आवास परिसर में नए सदस्या का शुभ आगमन हुआ है। प्रिय गौ माता ने एक नव वत्सा को जन्म दिया है जिसके मस्तक पर ज्योति का चिह्न है। उन्होंने बछिया को दुलार करते हुए अपना एक वीडियो भी शेयर किया है। कैप्शन में उन्होंने लिखा, हमारे शास्त्रों में कहा गया है- गावः सर्वसुख प्रदाः। लोक कल्याण मार्ग पर प्रधानमंत्री आवास परिवार में एक नए सदस्य का शुभ आगमन हुआ है। प्रधानमंत्री आवास में गौ माता ने एक नव वत्सा को जन्म दिया है, जिसके मस्तक पर ज्योति का चिह्न है।

इसलिए, मैंने इसका नाम दीपज्योति रखा है। वीडियो में प्रधानमंत्री मोदी गाय के बच्चे को दुलराते हुए दिखाई दे रहे हैं। वह उसका तिलक करते हैं और फूलों का हार पहनाते हैं। इसके बाद अपनी गोद में उठाकर बगीचे में टहलाते हुए नजर आते हैं।

भारत दोस्ती को है तैयार ड्रैगन के भी नरम पड़े तेवर

- चीन से रिश्ते सुधरने के मिलने लगे हैं कई संकेत

नई दिल्ली (एजेंसी)। गलवान घाटी संघर्ष के बाद वर्षों से एशिया की दो महाशक्तियां भारत और चीन के रिश्ते बेपटरी हो चुके हैं। इसे सुधारने के लिए दोनों देशों के बीच कई बैठकें हो चुकी हैं। हालांकि, अब इसमें नरमी के संकेत मिल रहे हैं। भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर और राष्ट्रीय सुरक्ष सलाहकार अजीत डोभाल ने लगातार इसके लिए पहल किए हैं। अब चीन की तरफ से भी जो बयान सामने आए रहे हैं उससे रिश्ते सुधरने के संकेत मिल रहे हैं। चीन के विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता माओ निंग ने शुक्रवार को कहा कि पूर्वी लद्दाख के चार क्षेत्रों में सेनाओं के बीच तनातनी कम हुई है। रूस में भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और चीन के विदेश मंत्री वांग ई के बीच गुरुवार को ब्रिक्स देशों के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक से इतर हुई बैठक में दोनों देश द्विपक्षीय संबंधों को मजबूती देने के लिए सहमत हैं। चीन के विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता माओ निंग ने कहा कि दोनों देशों के प्रतिनिधियों के बीच सीमा मसले को लेकर दर्ज किए गए सुधार पर भी चर्चा हुई है। मिंग से जब पूछा गया कि पूर्वी लद्दाख में दोनों देशों की सेनाओं के बीच तनातनी के बाद बीते चार वर्षों से द्विपक्षीय संबंध सुस्त पड़े हैं, क्या इसे नई गति मिल सकती है।

मणिपुर में एक बार फिर बिगड़ सकते हैं हालात

बांग्लादेश संकट का फायदा उठाने की ताक में आतंकी

इंफाल (एजेंसी)। बांग्लादेश में खराब हुए हालात मणिपुर में तनाव को और बढ़ा सकते हैं। सुरक्षा एजेंसियों ने इसको लेकर अलर्ट जारी किया है। इसके मुताबिक बांग्लादेश में जो कुछ हो रहा है उसका फायदा उठाकर नॉर्थ-ईस्ट को वॉर जोन में बदला जा सकता है। कुछ न्यूज रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से ऐसा दावा किया गया है। इसमें बताया गया है कि यह बांग्लादेश स्थित कट्टरपंथी समूह जमातुल अंसार फिल हिंडल शरकिया या जमातुल अंसार के लिए बहुत माकूल हालात हैं। वजह, भारतीय उपमहाद्वीप में

अल-कायदा (एक्यूआईएस) का कुकी-चिन नेशनल फ्रंट के साथ बहुत करीबी संबंध है। जमातुल अंसार और कुकी चिन नेशनल फ्रंट चटगांव के पहाड़ी इलाकों में आर्म्स ट्रेनिंग कैंप चला रहे हैं। एजेंसी के मुताबिक इससे पहले यह बात सामने आई थी कि दोनों संगठनों ने प्रशिक्षण आयोजित करने के लिए एक लिखित समझौता किया था। सूत्रों के मुताबकि जमातुल अंसार स्थानीय संगठनों के साथ गठबंधन कर रहा है क्योंकि उनका एजेंडा भारत को अस्थिर करना है और पूर्वोत्तर स्थित उग्रवादी समूह हाथ मिलाने के लिए तैयार हैं। इसमें यह भी बताया गया है कि हथियारों के लिए म्यांमार से ड्रग मनी, एक्यूआईएस से कट्टरपंथी एजेंडा और एक अलग देश बनाने के लिए अमेरिकी पक्ष से दबाव एक और खेल है।

भारत मां को लहूलुहान करना चाहते हैं भटके हुए लोग

किशनगढ़ (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शुक्रवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी का नाम लिए बिना कटाक्ष करते हुए कहा कि भटके हुए लोग भारत मां को लहूलुहान करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति ने विदेश में इस तरह से व्यवहार किया कि वह अपने संविधान की शपथ भूल गए और देश के हितों की अनदेखी

कर संस्थाओं की गरिमा को ठेस पहुंचाई। उन्होंने कहा कि संविधान का पालन करना, उसके आदर्शों व संस्थाओं, राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का सम्मान करना मौलिक कर्तव्य है। धनखड़, किशनगढ़ में केंद्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान में '2047 में विकसित भारत में उच्च शिक्षा की भूमिका' पर संवाद कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

आप बारिश में विरोध-प्रदर्शन कर रहे, मैं रातभर सो नहीं पाई

- कोलकाता में प्रदर्शनकारी डॉक्टरों से मिलीं ममता, कार्रवाई का दिया भरोसा

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने साल्ट लेक स्थित स्वास्थ्य भवन में प्रदर्शनकारी डॉक्टरों से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने आश्वासन दिया कि वह सीनियर अधिकारियों से मिलकर उनकी समस्या का समाधान निकालेंगी। इतना ही नहीं, ममता ने डॉक्टरों से समय मांगा और दोषियों को सजा दिलाने का भी वादा किया। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने प्रदर्शन स्थल पर चिकित्सकों से कहा कि संकट को हल करने का यह मेरा आखिरी प्रयास है। उन्होंने कहा कि आरजी कर अस्पताल की रोगी कल्याण समिति को भंग करने की घोषणा की। हालांकि मुख्यमंत्री की बातों का डॉक्टरों पर बहुत असर पड़ता नहीं दिखा। ममता बनर्जी के धरना स्थल पर पहुंचने के बाद प्रदर्शनकारी चिकित्सकों ने कहा कि जब तक चर्चा नहीं हो जाती, हम अपनी मांगों को लेकर समझौता करने के लिए तैयार नहीं हैं। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने प्रदर्शनकारी डॉक्टरों से बात करते हुए कहा कि मैं खुद छात्र आंदोलन करके आगे आई हूं, मैंने अपने जीवन में भी बहुत संघर्ष किया है, मैं आपके संघर्ष को समझती हूं। मुझे मेरे पद की चिंता नहीं है। कल रात भर बारिश हुई आप यहां धरने पर बैठे थे मैं रात भर परेशान रही... आपकी मांगों को आपसे सुनने के बाद मैं उसका अध्ययन करूंगी। उन्होंने कहा कि मैं आपसे मुख्यमंत्री के तौर पर नहीं, बल्कि आपकी 'दीदी' के तौर पर मिलने आई हूं।

इंदौर में सीएम यादव बोले-बस स्टैंड में दिखेगी एयरपोर्ट की झलक

सिंहस्थ से पहले शुरू होगा 100 करोड़ की लागत से बना आईएसबीटी,उज्जैन-वाराणसी ट्रेन को दिखाई हरी झंडी

भोपाल/इंदौर(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शनिवार दोपहर इंदौर पहुंचे। दोपहर 2.25 बजे वीसी द्वारा मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के अंतर्गत उज्जैन में आयोजित तीर्थ यात्रा कार्यक्रम का शुभारंभ किया। यहां सीएम ने उज्जैन-वाराणसी ट्रेन को हरी झंडी दिखाई।

गंगाजल लाजो म्हारा का भी दीजो- मुख्यमंत्री डॉक्टर यादव ने यात्रा पर जा रहे तीर्थ यात्रियों से संवाद भी किया। उन्होंने बुजुर्ग प्रभु लाल से मालवी भाषा में कहा कि वाराणसी से गंगाजल लाजो म्हारा का भी दीजो।

सिंहस्थ से पहले शुरू होगा आईएसबीटी- इसके बाद डॉक्टर मोहन यादव ने निर्माणाधीन इंटर-स्टेट बस टर्मिनस का अवलोकन किया। थोड़ी ही देर में मुख्यमंत्री सांची प्लांट के निरीक्षण और यहाँ कर्मचारियों से संवाद कार्यक्रम के लिए प्रस्थान करेंगे। इस मौके पर सीएम ने कहा कि ऐसी सुविधा दी जा रही है, जो देश में मध्यप्रदेश का मान बढ़ाए। आईएसबीटी बस स्टैंड में एयरपोर्ट की झलक दिखाई देगी। जनता की सुविधा को देखते हुए 100 करोड़ का बजट इसमें रखा गया है।

सपा की सीट पर भी खुद के दावेदार खोज रही कांग्रेस

- कांग्रेस की इस कवायद के निकाले जा रहे सियासी मायने

मेरठ (एजेंसी)। यूपी में 10 विधानसभा सीटों पर होने वाले उपचुनाव में समाजवादी पार्टी से गठबंधन होने के दावे के बाद भी कांग्रेस चुनाव की सामानंतर तैयारी कर रही हैं। सभी सीटों पर दावेदारों की खोज चल रही हैं। वेस्ट यूपी के मुरादाबाद जिले की कुंदरकी सीट हो या मुजफ्परनगर जिले की मीरापुर सीट। इसी तरह अलीगढ़ जिले की खैर या गाजियाबाद जिले की गाजियाबाद सदर सीट, चारों पर कांग्रेस के पर्यवेक्षक दावेदारों के आवेदन एकत्र कर रहे हैं। शुक्रवार शाम को ही कुंदरकी सीट पर दावेदारों के आवेदन लेने पहुंचे दो पर्यवेक्षकों के सामने 13 लोगों ने चुनाव लड़ने के लिए आवेदन किए। ऐसे में सियासी जानकार इसके कई मायने निकाल रहे हैं।

शिमला मस्जिद विवाद, हिमाचल के पांच जिलों में जबरदस्त प्रदर्शन

सैकड़ों लोगों ने संजौली में पुलिस लाठीचार्ज के विरोध में निकालीं रैलियां, बाजार बंद रहे

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश की मस्जिदों में अवैध निर्माण के विवाद को लेकर 4 जिलों में प्रदर्शन हो रहा है। शिमला से सटे सुन्नी, बिलासपुर, हमीरपुर, सिरमौर जिले के पांवटा साहिब और मंडी के सुंदरनगर में हिंदू संगठनों ने शनिवार को आक्रोश रैली निकाली। ये संगठन शिमला के संजौली मस्जिद के खिलाफ प्रदर्शन में पुलिस लाठीचार्ज का विरोध कर रहे हैं। प्रदर्शनकारियों की मांग है कि दूसरे राज्यों से आने वाले लोगों का पुलिस वैरिफिकेशन हो। साथ ही उनके कामकाज पर नजर रखी जाए। इस प्रदर्शन के समर्थन में पूरे प्रदेश के बाजार भी 2 घंटे बंद रखे गए। प्रदर्शन को देखते हुए पूरे राज्य में मस्जिदों और मुस्लिम आबादी वाले इलाकों के बाहर पुलिस

तैनात की गई है। शिमला में स्थानीय युवक की पिटाई से शुरू हुआ विवादः शिमला में 31 अगस्त की शाम को मल्याणा गांव में एक स्थानीय व्यक्ति की पिटाई की गई। आरोप लगे कि मुस्लिम समुदाय के लोगों ने उसे पीटा। मारपीट के बाद आरोपी शिमला की संजौली मस्जिद में छिप गए। स्थानीय लोगों ने अगले ही दिन यानी 1 सितंबर को संजौली में मस्जिद के बाहर प्रदर्शन किया। आरोप लगाया कि 5 मंजिला मस्जिद के 3 फ्लोर अवैध हैं। टॉप फ्लोर पर आने वाले उनके घरों में तांका-झांकी करते हैं। स्थानीय लोगों का आरोप है कि संजौली में बनी मस्जिद अवैध है।

इंदौर एमबाय में डॉक्टर्स में झड़प, छेड़छाड़ का आरोप

लापता डॉक्टर पर आरोप लगाने वाली सीनियर के केबिन के सामने धरना

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में एमवाय अस्पताल से लापता डॉ. हेमंत गिरवाल (40) का 48 घंटे बाद भी पता नहीं चला है। शनिवार सुबह करीब 11 बजे 100 से ज्यादा जूनियर डॉक्टर्स ने अस्पताल मैनेजमेंट के खिलाफ प्रदर्शन किया। इस दौरान सीनियर डॉक्टर्स से उनकी बहस हो गई। बात हाथापाई तक पहुंच गई। दरअसल, एमवाय अस्पताल में पदस्थ डॉ. हेमंत कुमार गिरवाल गुरुवार दोपहर से लापता हैं। तीन दिन पहले एक अन्य यूनिट की सीनियर महिला डॉक्टर से वे टकरा गए थे। इस पर महिला डॉक्टर ने उन्हें सार्वजनिक रूप से लताड़ा था। उन्होंने छेड़छाड़ का आरोप भी लगाया था। साथ ही कमेटी के सामने माफीनामा लिखवाया था। तभी से डॉ. गिरवाल खुद की काफी बेइज्जती महसूस कर रहे थे।

डॉक्टर्स बोले– पहले भी आरोप लगा चुकीं

डॉक्टरों ने बताया कि डॉ. गिरवाल पर आरोप लगाने वाली सीनियर महिला डॉक्टर दो साल में चार से पांच मेल डॉक्टर के खिलाफ शिकायत कर चुकी हैं। वे अपने पद की ठसक दिखाने के लिए ऐसा करते रहती हैं। डिपार्टमेंट की तरफ से उन पर एफआईआर होनी चाहिए।शनिवार को एमवाय अस्पताल में डॉ. गिरवाल के साथी डॉक्टरों ने प्रदर्शन किया।

महिला डॉक्टर ने कमेटी के सामने माफी मंगवाई

डॉ. गिरवाल से विवाद के बाद सीनियर डॉक्टर ने महिला सुरक्षा को लेकर बनी कमेटी में शिकायत कर दी थी। डॉ. गिरवाल को बयान के लिए बुलाया गया, तब उन्होंने कहा कि मैं जानबूझकर नहीं टकराया और न ही छेड़छाड़ की। महिला डॉक्टर ने उन्हें कमेटी के सामने भी खूब जलील किया। डॉ. गिरवाल ने लापता होने से पहले एक लेटर छोड़ा है, जिसमें लिखा है कि टक्कर को छेड़छाड़ बताकर मुझे प्रताड़ित किया गया। इससे बेहद शर्मिंदगी महसूस कर रहा हूं।

लापता हुए डॉ. गिरवाल ने लेटर में लिखा...

मैं डॉक्टर हेमंत कुमार गिरवाल आरएसओ प्रथम वर्ष ऑर्थोपैडिक डिपार्टमेंट एमवाय में पदस्थ हूं। मेरे साथ जो घटना हुई है, उसके बारे में बताना चाहता हूं। 12 सितंबर को ऑपरेशन थिएटर नंबर 2 में एनिस्थिसिया की महिला डॉक्टर ने मुझ पर बेबुनियाद चरित्र हनन का आरोप लगाया। 13 सितंबर को एनिस्थिसिया विभाग की कमेटी के सामने हाजिर हुआ। मुझसे लिखित माफीनामा लिया गया।

माफी में पूरी गलती मेरी होना बताया गया। मुझे इस सेवा में 10 साल हो गए हैं, लेकिन ऐसा आरोप पहले कभी नहीं लगा।यह दुर्भाग्यवश जो मेरे साथ हुआ, उससे मैं काफी आहत हुआ हूं। मानसिक रूप से तनाव में हूं। मेरी सामाजिक प्रतिष्ठा धूमिल हो चुकी है। घटना के बाद महिला सहकर्मियों के साथ काम करते हुए भयभीत और लज्जित महसूस कर रहा हूं। मेरा कार्य प्रभावित हो रहा है। मैं एक शादीशुदा व्यक्ति हूं। यदि इस घटना का पता मेरे परिवार में लगता है तो मेरा वैवाहिक संबंध बिगड़ने या टूटने की नौबत आ सकती है। मेरी पारिवारिक छवि, सामाजिक प्रतिष्ठा धूमिल होने का खतरा उत्पन्न हो गया है।

26.5 एकड़ का होगा खजराना गणेश मंदिर कैंपस

इंदौर में महाकाल मंदिर की तर्ज पर बनेगा मंडप; श्रद्धालुओं के लिए 5 खास सुविधाएं भी

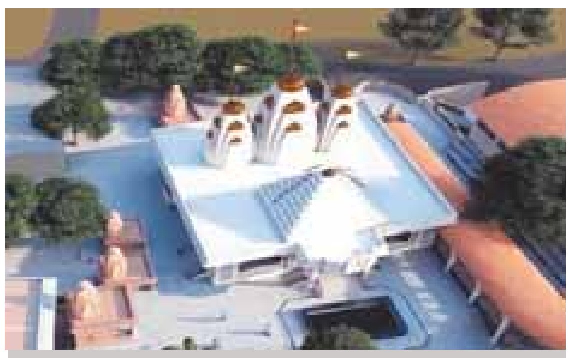

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के खजराना गणेश मंदिर का कैंपस 8.5 एकड़ से बढ़कर 26.5 एकड़ में बनेगा। मास्टर प्लान के मुताबिक 18 एकड़ जमीन में इसका विस्तार होगा। उज्जैन के महाकाल मंदिर की तर्ज पर नागर शैली में बड़ा मंडप बनाया जाएगा। श्रद्धालुओं के लिए 10 हजार वर्गफीट में क्लॉक रूम, विश्राम गृह, फीडिंग रूम, डे केयर रूम के साथ प्राथमिक उपचार कक्ष भी बनेगा। ये काम सिंहस्थ-2028 के पहले हो जाएंगे। मंदिर के पुराने स्वरूप से कोई छेड़छाड़ नहीं की जाएगी। कलेक्टर आशीष सिंह और मंदिर प्रबंध समिति ने इसे प्रारंभिक मंजूरी दी है। प्लान के अनुसार अन्न क्षेत्र और शेड भी नागर शैली में विकसित किया जाएगा। प्लान में नया भव्य प्रवेश द्वार बनाया जाएगा, सुविधाजनक पार्किंग, छायादार पेड़ और रोटरी बनेगी। पहले से बने मार्ग यथावत रहेंगे। स्थानीय वातावरण के हिसाब से पेड़-पौधे लगाए जाएंगे।

दिव्यांग और बुजुर्गों के लिए बनेगा रैंप

पहले से बनी हुई प्रसाद दुकानों के ऊपर नया शेड बनेगा, जो बारिश और धूप से भक्तों को बचाएगा। मंदिर के आगे एक विशाल भवन का निर्माण होगा, जिसमें महाकाल की तर्ज पर रैंप भी बनेगा। इससे दिव्यांग, बुजुर्ग और बच्चे भी आसानी से मंदिर में प्रवेश कर सकेंगे। दर्शनार्थियों की सुविधा के लिए विशेष मार्ग बनेगा।

20 करोड़ रुपए के खर्च का अनुमान

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार खजराना गणेश मंदिर के नवीनीकरण और सौंदर्यीकरण पर 20 करोड़ रुपए से ज्यादा की राशि खर्च होने का अनुमान है। वास्तविक खर्च के बारे में अभी अनुमान लगाया जा रहा है। प्रबंध समिति की अगली बैठक में इस राशि के बारे में अंतिम निर्णय लिया जाएगा। मास्टर प्लान पर होने वाले खर्च को मंदिर में आने वाली दान राशि और भक्तों के सहयोग से पूरा किया जाएगा। जिला प्रशासन ने एक्सपर्ट की मदद से यह प्लान तैयार करवाया है, जिसे जल्द ही सार्वजनिक किया जाएगा और लोगों के सुझाव भी बुलाए जाएंगे।

इंदौर में एमबीए स्टूडेंट्स से लिखवाया खुद का शोक संदेश

प्रोफेसर का तर्क– ये असाइनमेंट क्रिएटिव थिंकिंग का हिस्सा, मानवाधिकार आयोग से शिकायत

इंदौर (एजेंसी)। यह विश्वास करना कठिन है कि (स्टूडेंट का नाम) अब आप हमारे साथ नहीं हैं। आपकी यादें कभी नहीं भुलाई जाएंगी। वे सदैव हमारे साथ रहेंगी। बड़े दुःख के साथ मुझे आपको

सूचित करना पड़ रहा है कि ......कुमार पांडे अब हमारे साथ नहीं हैं।इंदौर की देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी के एमबीए के स्टूडेंट्स को ये शोक संदेश अपने फोटो के साथ खुद के लिए लिखना पड़ा। उनको प्रोफेसर डॉ. अतुल भरत ने ये असाइनमेंट दिया था। मामले की शिकायत मानव अधिकार आयोग से की गई है। डॉ. अतुल भरत यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स डिपार्टमेंट के प्रोफेसर हैं। वे प्रबंधन सिद्धांत पढ़ाते हैं। उन्होंने स्टूडेंट्स से अपनी-अपनी फोटो के साथ मौत के बाद दिया जाना वाला शोक और श्रद्धांजलि संदेश लिखकर लाने के लिए कहा था। नंबर कटने के डर से स्टूडेंट्स ने तय फॉर्मेट में असाइनमेंट जमा भी कर दिया। खुद के शोक संदेश का असाइनमेंट जमा करने के बाद विवाद खड़ा हो गया। प्रोफेसर पर कार्रवाई की मांग की गई है। अब प्रोफेसर इस असाइनमेंट को क्रिएटिव थिंकिंग का हिस्सा बता रहे हैं।

घर से जेवर सहित नकदी चुराई

पुलिस ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के सदर बाजार थाना इलाके में अज्ञात आरोपी घर से सोने-चांदी के जेवर चुरा ले गए। मामले में पुलिस ने शिकायत पर आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया है। पुलिस आरोपियों का पता लगाने में जुटी है। सीसीटीवी फुटेज खंगाल आरोपियों के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है।सदर बाजार थाना पुलिस के मुताबिक फरियादी गरिमा जैन उम्र 32 साल निवासी अरिहंत पार्क दादावाडी के पास रामबाग की शिकायत पर पुलिस ने अज्ञात आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया है। आरोपी घर से एक सोने की चैन, चांदी के जेवर सहित नकदी रुपए चुरा ले गए।

पीएम एक्सीलेंस कॉलेज में बनेगी मल्टी स्टोरी बिल्डिंग

10 से ज्यादा प्रोफेशनल डिग्री कोर्स शुरू होंगे, एक साल ट्रेनिंग, कोर्स होते ही नौकरी पक्की

इंदौर (एजेंसी)। 64 साल पुराने शासकीय अटल बिहारी वाजपेयी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय (जीएससी) पूरी तरह

बदल जाएगा। यहां मल्टी स्टोरी बिल्डिंग बनेगी। इसमें 120 स्मार्ट क्लास रूम होंगे। एक इनडोर स्टेडियम भी तैयार होगा। इस पीएम एक्सीलेंस कॉलेज में अगले वर्ष से किसी भी ट्रेडिशनल कोर्स की सीटें नहीं बढ़ेंगी, बल्कि दस से ज्यादा नए प्रोफेशनल डिग्री कोर्स शुरू होंगे। सेक्टर स्किल काउंसिल के जरिये ये शुरू होंगे। इन कोर्स में पढ़ाई पूरी होने से पहले जॉब पक्की हो जाएगी। अलग-अलग तीन वर्षीय कोर्स दो साल पढ़ाई और थर्ड ईयर में छात्रों को एक साल की अप्रेंटिसशिप (कम्प्लीट ट्रेनिंग) मिलेगी। इन छात्रों को सेक्टर स्किल काउंसिल ही मल्टी नेशनल कंपनियों में अवसर दिलवाएगी। प्राचार्य डॉ. प्रकाश गर्ग के मुताबिक ज्यादातर छात्रों को तो वही कंपनियां कोर्स पूरा होने से पहले जॉब दे देंगी, जो सालभर उन्हें ट्रेनिंग देंगी। बाकी के लिए भी सेक्टर काउंसिल मदद करेगी।

इंदौर के सेंट अर्नोल्ड स्कूल में ओणम की धूम

इंदौर (एजेंसी)। सेंट अर्नोल्ड स्कूल, विजयनगर, इंदौर में

फसल, समृद्धि और शांति का त्यौहार ओणम 14 सितंबर को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सांस्कृतिक, भाषाई मतभेदों को पार करते हुए स्टाफ के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक ओणम उत्सव में भाग लिया। शिक्षकों द्वारा पारंपरिक 'पुक्कलम' (फूलों की रंगोली) तैयार की गई। इस अवसर पर, शिक्षिकाओं ने पारंपरिक सेट (ओणम) साड़ी पहनी हुई थी। सभी ने ओणम के विशेष पायसम का आनंद लिया, जोकि खीर जैसा एक मीठा व्यंजन होता है।

अब और सुरक्षित होगा इंदौर

बड़े संस्थानों पर कैमरे लगाना जरूरी, 1500 वर्गफीट से बड़े संस्थानों के लिए अनिवार्य

इंदौर (एजेंसी)। शहर में कम्युनिटी कैमरा सिस्टम नीति लागू कर दी गई है। इसी के साथ इंदौर अपनी कैमरा नीति बनाने वाला देश का पहला शहर बन गया है। अब 1500 वर्गफीट से बड़े व्यावसायिक प्रतिष्ठान, 100 से ज्यादा लोगों के एकत्रित होने के सार्वजनिक स्थान, प्रतिष्ठान, टाउनशिप, हाउसिंग सोसायटी में क्लोज सर्किट टेलीविजन कैमरा (सीसीटीवी) लगाना अनिवार्य होगा।महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने डिजिटल सिटी की दिशा में बढ़ते हुए परिषद में प्रस्ताव रखा था। सोमवार को इसके लिए गजट नोटिफिकेशन कर दिया गया। एक अनुमान के अनुसार इस नीति के बाद शहर के विभिन्न क्षेत्रों में 50 हजार से ज्यादा सीसीटीवी कैमरे लगेंगे। इन कैमरों की इंटीग्रेटेड कंट्रोल एंड कमांड सेंटर से निगरानी की जा सकेगी। 30 दिन का वीडियो सुरक्षित रखना होगा। यह भी ध्यान रखना होगा, किसी की निजता का उल्लंघन नहीं हो रहा हो।

स्मार्ट और आधुनिक सिस्टम बनेगा

कहां कैमरे तैनात होंगे, एंगल व पोजिशन कैसी होगी, डाटा आदि के लिए सॉफ्टवेयर बनेगा। कैमरों की फीडिंग 24 घंटे मिलती रहे, इसके लिए अत्याधुनिक स्वचलित सिस्टम रहेगा। इंटरनेट नेटवर्क प्रदाताओं को प्रतिष्ठान से प्राप्त स्टोरेज यूनिट का डाटा आईसीसीसी को देना होगा। रजिस्ट्रेशन भी अनिवार्य होगा। कैमरा लगाने और इसे संचालित करने का खर्च संबंधित प्रतिष्ठान ही उठाएंगे।

संचालन के लिए चार समितियां

नीति संचालन के लिए स्थानीय, प्रशासनिक स्तर पर चार समितियों का गठन किया जाएगा। ये जुर्माना भी लगा सकेगी।

पर्यवेक्षण समिति व सलाहकार – इसमें निगम के अपर आयुक्त, सहायक पुलिस आयुक्त, भवन अधिकारी, राजस्व निरीक्षण व अन्य सदस्य होंगे। यह समिति कानून का उल्लंघन करने वालों पर कार्रवाई कर सकेगी।

निगरानी और नियंत्रण समिति – इसमें निगम के अपर आयुक्त, अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त सुरक्षा, सिटी इंजीनियर व अन्य विशेषज्ञ सदस्य होंगे। यह तकनीकी व निगरानी संबंधी काम करेगी।

क्षेत्रीय समिति – यह छोटी दुकानों, क्षेत्रों के सर्विलांस सिस्टम के साथ बनेंगी।

क्रियान्वयन समिति – स्थानीय स्तर पर निगरानी करेगी। इसमें पुलिस निरीक्षक, भवन निरीक्षक व अन्य सदस्य होंगे। शहर के फैलाव, बढ़ रहे अपराध और असुरक्षा को देखते हुए सार्वजनिक स्थानों पर कैमरों की तैनाती का निर्णय लेकर म्युनिसिपल एक्ट के अनुसार कम्युनिटी कैमरा सर्विलांस नीति तैयार की है।

अनंत चतुर्दशी के चल समारोह की ड्रोन से होगी निगरानी

इंदौर में सुरक्षा इंतजाम मे तैनात होगी 3 हजार फोर्स ; 4 जगहों पर रहेगी फायर ब्रिगेड, एम्बुलेंस

इंदौर (एजेंसी)। अनंत चतुर्दशी चल समारोह 17 सितंबर को निकलेगा। पुलिस और प्रशासन ने इसकी तैयारी कर ली है। करीब 5 किमी लंबे झांकी मार्ग को इस बार 11 जोन और 22 सेक्टर्स में बांटा गया है। सुरक्षा के लिए प्रमुख चौराहों पर विशेष वॉच टॉवर होंगे, जिन पर एक टीआई सहित 10 जवानों का बल मौजूद होगा। 3 हजार पुलिस के जवान-अधिकारी, बीएसएफ की 2 टुकड़ियां और 1 हजार से ज्यादा नगर सुरक्षा समिति के कार्यकर्ता तैनात रहेंगे। इंटेलिजेंस व आसूचना एडिशनल डीसीपी प्रमोद सोनकर ने बताया 18 वॉच टॉवर पूरे झांकी मार्ग पर रहेंगे। 12 प्रमुख झांकियों के साथ भी पुलिस की अलग-अलग टुकड़ी चलेगी। 36 इमारतों की दूसरी मंजिल व छतों से दूरबीनधारी सशस्त्र बल के जवान तैनात रहेंगे। असामाजिक तत्वों पर निगरानी के लिए 2 पुलिस कंट्रोल रूम बनाए जा रहे हैं। पहला कंट्रोल रूम कृष्णपुरा छत्री पर वीर सावरकर मार्केट के गेट पर पार्किंग वाले स्थान पर होगा। वहीं दूसरा बंबई बाजार इलाके में। यहीं पर बीएसएफ की एक विशेष शसस्त्र बल की टुकड़ी तैनात होगी और दूसरी टुकड़ी राजबाड़ा पर। 5 ड्रोन पुलिस के पूरे झांकी मार्ग पर अलग-अलग रूट पर उड़ाए जाएंगे। भीड़ में महिलाओं-युवतियों से छेड़छाड़ व नशा कर आने वाले बदमाशों पर इनसे निगरानी रखेंगे। झांकी मार्ग के अतिरिक्त शहर में पेट्रोलिंग के लिए अलग से टीमें तैनात की हैं, जो हर प्रमुख मार्ग से झांकी के मार्ग को कनेक्ट करने वाले मार्ग पर गश्त करेंगी।

इंदौर में ऐतिहासिक जैन धरोहरों की पोस्टर प्रदर्शनी

सुगंध दशमी पर विद्या पैलेस जैन मंदिर में जुटी समाजजन की भीड़

इंदौर (एजेंसी)। भगवान महावीर स्वामी के 2550 वे निर्वाण कल्याणक महोत्सव वर्ष के अंतर्गत श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर विद्या

पैलेस द्वारा सुगंध दशमी पर जैन पुरातत्व धरोहर पर एक महत्वपूर्ण पोस्टर प्रदर्शनी शुक्रवार को लगाई गई। इसका संकलन वर्द्धमानपुर शोध संस्थान के संयोजक और विश्व जैन संगठन इंदौर के महामंत्री ओम पाटोदी द्वारा किया गया। उक्त जानकारी देते हुए श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर विद्या पेलेस के महामंत्री और विश्व जैन संगठन इंदौर अध्यक्ष मंयक जैन द्वारा बताया गया कि यह अद्भुत संकलन है। इसमें हम अवलोकन कर सकते हैं जैन धर्म के इतिहास के अनछुए पहलुओं का। प्रदर्शनी का शुभारंभ टीके मंजु वेद के करकमलों से गणिनी आर्यिका सौहार्द मति माताजी के सान्निध्य में हुआ। मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष मुकेश जैन, प्रेमचंद जैन, मयूर जैन आदि समाजजन ने इस प्रदर्शनी का अधिक से अधिक संख्या में पधार कर अवलोकन की अपील की है।

इंदौर में देर शाम पुलिस का फ्लैग मार्च

राष्ट्रपति के आगमन व त्योहारों में सुरक्षा देने का प्लान लागू

इंदौर (एजेंसी)। राष्ट्रपति आगमन के साथ ही आने वाले त्योहारों को देखते हुए पुलिस ने सुरक्षा के लिए प्लान लागू किया है। पुलिस कमिश्नर ने शुक्रवार को कई प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए हैं। डोल ग्यारस पर निकलने वाले जुलूस के पहले खजराना पुलिस और रैपिड एक्शन फोर्स ने फ्लेग मार्च किया। वहीं, पुलिस टीम ने रेलवे स्टेशन व नेहरू पार्क में शुक्रवार को सुरक्षा व्यवस्था जांचने मॉक ड्रिल की। पुलिस कमिश्नर राकेश गुप्ता ने बीएनएस के तहत कई प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए हैं। किसी भी पंप से डिब्बे, बोतल या खुले रूप में पेट्रोल, डीजल बेचा नहीं जाएगा। किसी भी तरह के आयोजन पर प्रतिबंध रहेगा। अस्त्र-शस्त्र, विस्फोटक सामग्री पर भी प्रतिबंध रहेगा। मेडिकल प्रैक्टिशनर के बगैर लिखी गर्भपात/गर्भ समापन औषधियों के बेचने पर भी रोक लगाई गई है।

सुरक्षा के लिए पूरे शहर में फ्लैग मार्च निकाला

डीसीपी जोन-2 अभिनय विश्वकर्मा की टीम ने शुक्रवार को खजराना समेत पूरे शहर में रैपिड एक्शन फोर्स के साथ फ्लैग मार्च निकाला। वहीं, सुरक्षा शाखा और बीडीडीएस की टीम ने शुक्रवार को रेलवे स्टेशन और नेहरू पार्क में मॉकड्रिल की। सोशल मीडिया पर भड़काऊ और अफवाह वाली पोस्ट मिलने पर ग्रुप एडमिन जिम्मेदार होगा। किराएदारों, घरेलू कामगारों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों, होटल, लॉज, धर्मशाला में ठहरने वालों की सूचना संबंधित थाने पर देना जरूरी होगा।

ट्रैफिक व्यवस्था के लिए भी होगा बीट सिस्टम

विजय नगर व रेडिसन पर भी फ्लायओवर के प्रस्ताव, रोप-वे की भी संभावनाएं तलाश रहे

इंदौर (एजेंसी)। अब विजय नगर और रेडिसन चौराहा पर फ्लायओवर का प्रस्ताव बनाने की तैयारी है। यह संभावना भी देखी जा रही है कि शहर में किस फीडर रोड पर रोप-वे बनाना ठीक रहेगा। थानों की तरह ट्रैफिक व्यवस्था के लिए भी बीट सिस्टम बनाया जाएगा। शुक्रवार को जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में यह फैसले लिए गए। बैठक में पीपल्याहाना से बायपास तक 140 स्कीम की रोड पर भी फ्लायओवर या एलिवेटेड कॉरिडोर की संभावना तलाशने पर बात हुई। पहली बार शहर में ट्रैफिक के लिए अलग-अलग समय में काम कर चुके एक्सपर्ट को भी बैठक में बुलाया गया। कलेक्टर आशीष सिंह ने बताया कि ट्रैफिक प्रबंधन के बीट सिस्टम की निगरानी के लिए नोडल अधिकारी

नियुक्त होंगे। बैठक में निगमायुक्त शिवम वर्मा, जिला पंचायत सीईओ सिद्धार्थ जैन, अपर कलेक्टर ज्योति शर्मा, डीसीपी ट्रैफिक अरविंद तिवारी, आईडीए सीईओ आरपी अहिरवार, एडीएम रोशन राय मौजूद थे।

विशेषज्ञ बोले– एलिवेटेड कॉरिडोर की जगह अलग–अलग ब्रिज ज्यादा सही

विजयनगर और रेडिसन चौराहे पर फ्लायओवर के लिए जल्द ही फिजिबिलिटी सर्वे होगा। ई-रिक्शा के संचालन में सुझावों के लिए एक और उपसमिति बनेगी। एक सप्ताह में रिपोर्ट देगी। पार्किंग व्यवस्था, रोपवे केबल कार संबंधी फिजिबिलिटी सर्वे पर भी चर्चा हुई। एलिवेटेड कॉरिडोर की जगह अलग-अलग स्थानों पर फ्लायओवर बनाना ज्यादा अच्छा होगा।

इन फैसलों पर अब तक काम नहीं– 21 चौराहों पर फ्लायओवर और एलिवेटेड रोड के लिए निगम और आईडीए सर्वे करवाएगा। इस दिशा में अब तक कोई पहल नहीं की गई है। गीता भवन पर नवरतन बाग से आने वाले ट्रैफिक के लिए और बिचौली हप्सी में बायपास जाने वाले ट्रैफिक के लिए छोटी-छोटी दो रोड अलग से बनेगी। इस पर काम शुरू नहीं हुआ।

डंक

डॉ. श्यामबाबू शर्मा

लोचहा, अड़ौवा और खालिकपुर तीनो गांव की गांव सभा खालिकपुर। बदरी परधान की पहिल पत्नी एक बेटे को जन्म देकर गोलोकवासी हो गईं। विधुर का दुःख विधवा से कहीं ज्यादा। बइठकुओं से देखा न जा रहा था। 'भइया एतनी चिंता ठीक नहीं है, मेहरियै मरी है; दूसरि आई।' गिरिजा खुद अविवाहित थे परंतु गांव भरे के शादी बियाह के ठेकेदार। शेष मण्डली ने प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया और फिर बदरी महराज की दूसरी पत्नी से चार बेटे पांच कन्याओं का प्रादुर्भाव हुआ। भरा पूरा परिवार। पांच बेटवा और पांचै बिटिया। गांव सभा में इनकी परधानी को कई बार चुनौती दी गई। बीस साल की परधानी के बाद पांचवीं बार तिरसठ वोट से गंगादयाल बाबा को पटखनी दी थी। उनका बड़ा बेटा मास्टर था। बड़ी बुद्धि लगाया लेकिन जब पांच बजे संध्या को रहिमनपुर में आग लग गई तो सारा गांव, 'दौड़ो दौड़ो आगि लागि गै।' और इधर रामधर महरा ने बचे बैलेट पेपर में दे त्तेरी की। गांव और लोकतंत्र हार गया बदरी जीत गए।

दो बेटियां निपट गई थीं। तीसरी का विवाह आषाढ़ सुदी पंचमी को। तीनों गांवों में हल्दी बांटने का जिम्मा भोलइ, किस्नू और मन्नी के जिम्मे था। न्यौता बांटने, मिर्चवान पीसने और रहे सहे सब काम यही लोग देखते आ रहे थे। बियाह का न्योता पूरी गांव सभा को। रीति भांति यह कि बिटिया के विवाह में कोई भोजन न करता था। हां विदाई के दिन दो रुपिया, पांच रुपिया का सगुन सब देते। मातृ पूजन की कच्ची पर वंश परिवार, नाते रिश्तेदार और परजवटि को भी न्योत दिया गया; कहार, बाद्दार, नाऊ, बारी, लोहार, बढ़ई, धोबी, भुंजवा, भांट-चारण सबको। पांचौ बेटवा निगरानी रखते कि कोई नदारद तो नहीं है। सब नेवतहरी ध्यान रखते। 'का हो गंगाबलिया कहां रहिगा?' बदरी के जेठे बेटे उमा ने पिछली बार बहन के मैनहा भोज में कंधइया से पूछ लिया था ? फिर गंगाबली की ऐसी दशा हुई कि पंचायत में नजीर बन गई।

छिउल के पत्तल में उड़द, चना की दाल, भात और बेली रोटी। आषाढ़ का महीना और कचर पिच्च। मण्डप के नीचे पंगत चल रही थी। कन्याओं को शिखरन रोटी फिर मान्य लोग तदनंतर नाते रिश्तेदार। बाहर चौपारि में परजवटि।

'भोलइ भोलइ,! सब बइठ गये? हॉ भइया।'

सारा गांव उन्हें भइया ही कहता। यहां तक कि उनकी पत्नी भी। परधान जी के बेटे ने निगाह दौड़ाई। 'परसौ।'

जेवनारि परोसी जाने लगी। 'तमहूं बइठौ। हॉ भइया।' सारी चौपारि खचाखच भर गई थी। कहीं जगह नहीं। सबको सुभीते स्थान देने वाले को जगह भला कब मिली है! बदरी महराज को याद आया कि सामने हाता खाली है। स्वेद श्रम और कीचड़ में सने भोलइ। बगल में रंभाती भैंस। भोलइ का पुरुषत्व पहले तो चपरासी की नौकरी ने छीना और फिर परधान जी की खिदमतगीरी ने उसके स्वाभिमान को बधिया कर निर्वीर्य बना दिया था। भोलइ ने गोबर समेटा। पतरी डाली और 'हॉ भइया।' दाल- भात, बड़ा और बेली रोटी। सबका अपना अस्तित्व विलीन जैसे खालिकपुर की इस परजवटि की पंगत का। 'एक रोटी और। एक रोटी और। हॉ भइया।' भारी मक्खियां चुभते डंक।

लघुकथा

ब्रह्म-मुहूर्त में

रामेश्वरम तिवारी

रोजाना की तरह ब्रह्म-मुहूर्त में विक्रम श्मशान पहुँचा। उसने बेताल को कँधे पर बिठाया और चल दिया सैर-सपाटे को। बेताल ने जैसे ही कहानी सुनाने को मुँह खोला, विक्रम ने उसे टोका और बोला- 'आज उलटी गंगा बहाएँगे। मैं कहानी सुनाऊँगा और तुम मेरी समस्या का समाधान करोगे।'

बेताल ने कहानी सुनाना शुरू किया। मृत्यलोक में सनातनियों का एक देश है। जहाँ का राजा गजपति है। वह परम राष्ट्रवादी और समदर्शी है। दुनिया भर में उसकी बड़ी प्रसिद्ध है। वह शाँति का संदेशवाहक है। वह जिस भी देश में जाता है वहाँ पर उसका भव्य स्वागत और जयकार होती है। उसको सरस्वती द्वारा वाणी का वरदान प्राप्त है। जबभी उसका मुँह खुलता है सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठता है। बच्चे, बड़े, बूढ़े, स्त्री-पुरुष सभी उसकी भाषण के क़ायल है, पर उसके अपने देश में श्वान, मर्कट, मार्जारी आदि क़िस्म के कतिपय प्राणी हैं जो उसकी सिद्धि-प्रसिद्धि को लेकर हरदम भौंकते, कूदा-फाँदी और आँखें तरेरते रहते हैं।

गजपति स्वभाव से बड़े शाँत और धैर्यवान हैं। चूँकि उनके कान बड़े हैं। इसलिए एक से सुनते और दूसरे से बाहर निकाल देते हैं। पेट बड़ा होने के कारण अचरा-कचरा सब हज़्म कर जाते हैं। पर उनका सेनापति गिर का वासी है। वह चाहता है कि किसी तरह से गजपति के विरुद्ध होने वाली भौं-भौं, म्याऊँ-म्याऊँ की अपशुकनी आवाज़ों पर लगाम लगाई जाए। पर गजपति और उनके सेनापति को कुछ सूझ पड़ नहीं रहा है। वे माथा-पच्ची कर थक चुके हैं। विरोधी देश में अमन-चैन और व्यवस्था को पलीता लगाने पर तुले हैं। सेनापति ने कई बार बकचोदुओं को पिंजरे में बंद करने, उनकी अक्ल को ठिकाने लगाने के प्रयास किए, पर आँखों पर काली पट्टी चढ़ाए इंसाफ़ की देवी और ढीले-ढाले क़ानूनों की वजह से वे हर बार पिंजरे से बाहर निकलकर दोबारा ज़ोर-शोर से धमाल करना शुरू कर देते हैं। बेताल! तुम तो बड़े होशियार और अक्लमंद हो। अब जरा तुम्हीं कोई रास्ता सुझाओ ताकि गजपति देश में अपने रामराज के सपने को साकार कर सकें।

बेताल हँसते हुए बोला- 'देखो विक्रम! तुम जिस देश और राज्य की बात कर रहे हो, मैं उस देश के तंत्र और व्यवस्था के बारे में भलीभाँति जानता हूँ। वहाँ पर आजकल लोकतंत्र का बोलबाला है। जिसमें सबको कुछ भी अक-बक करने की पूरी आज़ादी है। इसलिए मेरी सलाह है कि गजपति और सेनापति को हैरान-परेशान होने की बजाए जहाँ तक संभव हो बकवादियों की उपेक्षा करना चाहिए। कौन गलत है और कौन सही है। इसका हिसाब-किताब समय आने पर खुद जनता करेगी। परिणाम यह होगा कि लाठी भी नहीं टूटेगी और साँप भी मर जाएगा।'

कविता

बुद्ध प्रेमी हैं

अनुजीत इकबाल, लखनऊ

ध्यान की गम्भीरता में बैठे हुए
एक मौन प्रेमी हैं बुद्ध
वह सृष्टि की प्रत्येक प्रेयसी को
स्वतंत्रता से दूर जाने की अनुमति देते हैं
किन्तु उनकी करुणा
उन प्रेमिकाओं को
पुनः प्रत्यावर्तन का आमंत्रण भी
प्रदान करती है

उन के अंतःकरण में प्रवाहित है
असीम अनुराग की सरिता
प्रत्येक विमुख आत्मा को
वह अपने चीवर में समाहित कर लेते हैं
जैसे तट की अशांत लहरों को
सागर आश्रय देता है
पुनः पुनः अनवरत

बुद्ध का प्रेम तटस्थ है
न वह रोकता है, न खींचता है
किंतु, प्रत्येक वापस लौटी हुई प्रेयसी को
आलिंगन करने का
असीम अनुराग रखता है

ये निशब्द प्रेम
कितना निस्संग और निस्पृह
समस्त बंधनों से मुक्त
प्रस्थान और आगमन से परे
जो बस प्रतीक्षा करना जानता है!

360 डिग्री नन्ही उड़ान में पंचतंत्र सी गंध

पुस्तक समीक्षा

डॉ. प्रेम भारती

समीक्षक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में देश के वैज्ञानिक विकास के साथ-साथ सांस्कृतिक विकास करने का उल्लेख मिलता है। जब मैंने अनुपमा अनुश्री की नवीनतम कृति '360 डिग्री नन्ही उड़ान' पढ़ी तो मुझे महसूस हुआ कि अनुपमा अनुश्री ने इस दिशा में सार्थक प्रयास किया है। तभी तो सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के प्रकाशन विभाग ने उसे प्रकाशित किया है।

प्रसन्नता का विषय यह भी है कि अनुश्री को हाल में ही 'बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केंद्र ' द्वारा 'श्री श्याम उपाध्याय बाल साहित्यकार सम्मान 2023' से सम्मानित किया गया है।

इस पुस्तक का महत्व यों ही अचानक नहीं हुआ! पुस्तक की विषय वस्तु भी रुचिकर है। मैंने उसमें पंचतंत्र की कहानियों की गंध का अनुभव किया। पुस्तक में 16 बाल कहानियाँ हैं।

विष्णु शर्मा ने पंचतंत्र संस्कृत भाषा में लिखा था। आज अगर वह जीवित होते तो जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग अनुश्री ने अपनी पुस्तक में किया है संभवतः वैसी भाषा का प्रयोग वे भी करते। एक शब्द में यदि हम कहें तो यह 'भाषा का आधुनिकीकरण ' है। समाज स्वीकृत स्वरूप है। इसके वाक्यों में एक साथ हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू का प्रयोग है। यहाँ तक की कहानियों के शीर्षक भी तीनों भाषाओं का एहसास कराते हैं।

पुस्तक में 16 कहानियाँ हैं जिनमें से कुछेक के शीर्षक इस प्रकार हैं -

1. हिंदी भाषा के शीर्षक- पारितोषिक , मन और विज्ञान, इंद्रधनुषी रंग , चारु की पहेली
2. हैप्पी वाला बर्थडे , स्नोर्कलिंग ,रियल हीरोज

सबसे पहले मैं भाषा की चर्चा इसीलिए कर रहा हूँ कि यह पहली पुस्तक देखने में आई जिसकी विषय वस्तु भाषा के मिश्रित रूप में है। यह मैं सोच रहा था कि हिंदी भाषा संस्कृति की और अंग्रेजी भाषा सभ्यता की प्रतीक है। इसका उदाहरण मैंने इस पुस्तक में देखा। मेरी चिंता का विषय यह है कि अगर साहित्य में ऐसी भाषा प्रतिष्ठित हो गई तो बालक सभ्य तो बनेगा लेकिन संस्कारी कैसे बनेगा किंतु जैसे-जैसे मैं पुस्तक पढ़ता गया , वैसे-वैसे मुझे लगा कि इसमें संस्कार के प्रचुर भाव भी दिखाई दे रहे हैं।

' मन और विज्ञान ' में सप्त ऋषियों की कहानी और ध्रुव की कहानी के अंश पढ़ने को मिले। 'रियल हीरोज' में मीराबाई चानू के खेल रत्न सम्मान और पद्मश्री सम्मान का उल्लेख करके यह सिद्ध किया है कि - बेटियाँ हैं हम। नहीं किसी से कम। हम में है दम खम। वहीं इस कहानी का मूलभूत सार है कि पश्चिम का अंधानुकरण या कॉपी कैट बनने से बेहतर है कि हम संघर्षो की आँच से तप कर निकले सफल देशभक्त व्यक्तित्वों की आत्मकथाएँ/ ऑटोबायोग्राफी पढ़ें और अच्छे गुण अपने अंदर समाहित करें। इस संग्रह की सभी कहानियाँ सकारात्मक भाव भरती हैं। पहली कहानी 'हैप्पी वाला बर्थडे' संवेदना की सूचक है।

' इंद्रधनुषी रंग ' कहानी में ' स्वस्थ तन और स्वस्थ मन 'के उद्देश्य को समाहित करते हुए बच्चों की खानपान की आदतों को सुधारने और उन्हें फास्ट फूड की आदत से छुटकारा पाने की नसीहत दी गई है। 'स्नोर्कलिंग ' कहानी में तैराकी को एक उपयोगी व्यायाम बताते हुए पानी के जीवों का सुंदर संसार बखूबी दर्शाया है। कहने का आशय यह है कि 21वीं सदी के भारत की नई शिक्षा नीति पर केंद्रित यह पुस्तक हर दृष्टि से रुचिकर बन पड़ी है। खेल संबंधी जानकारी, स्वास्थ्य संबंधी चिंता भी इसमें प्रकट की गई है। कोई ऐसा विषय नहीं जो शिक्षा की दृष्टि से छूटा लगे। बच्चों पर लिखना एक कठिन साधना है । यह कोई सहज विषय नहीं। अनुश्री एक अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था आरंभ भी चलाती हैं । इस पुस्तक को उन्होंने बड़े परिश्रम से अनुभव की आँच में तप कर लिखा है। बाल साहित्य जैसी उपेक्षित विधा को इससे बल मिला है।

संग्रह की कहानियाँ बहुआयामी हैं और उनकी बुनावट भी विशिष्टता लिए हुए है। ताजगी और प्रवाह इसे पाठक को अंत तक पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

रचनाकार- अनुपमा श्रीवास्तव 'अनुश्री'
प्रकाशक - सूचना प्रसारण मंत्रालय, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली , भारत
मूल्य - 210

विहान

मुझसे मिलने आ सकेगी हवा, फूल, चांदनी

ध्रुव गुप्त

कल रात तक मेरे कमरे की खिड़की पर देर तक दस्तके हुईं। सड़क की ओर खुलती यह खिड़की मैं बंद ही रखता हूं। आधी नींद में मैंने सोचा कि कोई आया भी तो दरवाजे से ही आएगा। खिड़की से कौन आता है भला ? हवा की दस्तक ही होगी। सुबह उठकर खिड़की खोली तो देखा कि मधुमालती के फूलों की एक नाजुक डाल सहसा उछलकर खिड़की के भीतर आ गई। उचकती और बलखाती हुई। मैंने आश्चर्य मिश्रित स्नेह से उसे देखा। कुछ देर उसे सहलाया, आंखों ही आंखों में बातें की और चेहरे पर ले जाकर उसका स्पंदन महसूस किया। कुछ देर लिए वहां से अलग जाकर लौटा तो पाया कि उस डाल के सभी फूल मुरझा चुके थे।

अभी कुछ ही देर पहले तक हंसते फूलों का यह अंत देखकर मन भर आया। क्या इन्हें सुबह तक मुझसे मिलने का ही इंतजार था? खिड़की भी तो खटखटाई थी इन्होंने देर रात तक। मैंने अनसुनी कर दी। अभी अपराध भावना से भरा हुआ हूं। नहीं, अब

सड़क की ओर खुलती यह खिड़की मैं कम से कम रात में बंद नहीं करूंगा। इनसे होकर कोई भी आ सकता है मुझसे मिलने - हवा, फूल, चांदनी, जुगनू, बारिश की बूंदें। या क्या पता मेरी ही मांगी हुई किसी मन्नत को पूरा करने के लिए आकाश से टूटा हुआ कोई तारा ही !

मौत के जिम्मेवार

शंकरानंद

याचनाओ के लिए ईश्वर है
वह कौन सा ईश्वर है जो
सब देखता है
सब सुनता है

सब समझता है
सिर्फ जवाब नहीं देता
जो हाथ जोड़ते हैं
वे अपने हिसाब से
चेहरे का भाव पढ़ते हैं
खुश होते हैं
भरोसा करते हैं

यातनाओं के लिए कौन है
जो सबकुछ तबाह करता है
लेकिन तबाह करने की
जवाबदेही नहीं लेता
पीछा छुड़ा कर हर घटना के बाद
भाग जाता है

इस तरह षड्यंत्र का शिकार मनुष्य
पछाड़ खाकर गिरता है और
गुमनाम मौत हासिल करता है
कोई इस मौत की जवाबदेही नहीं लेता।

लघुकथा

प्रभुनाथ शुक्ल

जिंदगी का संघर्ष

भाभी जी रसोई में रोटियां सेंक रहीं थीं। आटा गूथने के दौरान पूरा शरीर पसीने से तरबतर हो गया था। तवे पर रोटियां सेंकती भाभी ऐसी लग रहीं थीं जैसे वह रोटियां नहीं खुद की पीड़ा सेंक रहीं हों। भाभी पूरे पचत्तर साल का सफ़र तय कर लिया था। लेकिन गठिया रोग इस उमर में उनका दुश्मन बन गया था। चलना -फिरना उठना बैठना सब मुश्किल हो गया था। लेकिन पेट की आग को बुझाने के लिए रसोई में भोजन पकाने के लिए जाना ही था। कभी -कभी गठिया का दर्द अधिक बढ़ने पर भईया -भाभी की रात करवटों में बीत जाती।

भईया सेना से रिटायरमेंट हैं। नौकरी से रिटायर होने के बाद गाँव में रहते हैं। दोनों बेटों को पढ़ा लिखा कर काबिल बना दिया है। दोनों इतने काबिल बन गए हैं कि अब गाँव आना ही नहीं चाहते हैं। भाभी दो -दो बार अस्पताल में भर्ती हुई जीवन और मौत से किसी तरह निकल कर घर आ गई, लेकिन दोनों बहुएँ मुँह दिखाने तक नहीं आई। बहुओं ने कहा की वह माँ जी की सेवा करने नहीं आ सकती, क्योंकि बच्चे पढ़ रहें हैं उनके कैरियर का सवाल है। जिन बेटे और बहुओं को काबिल

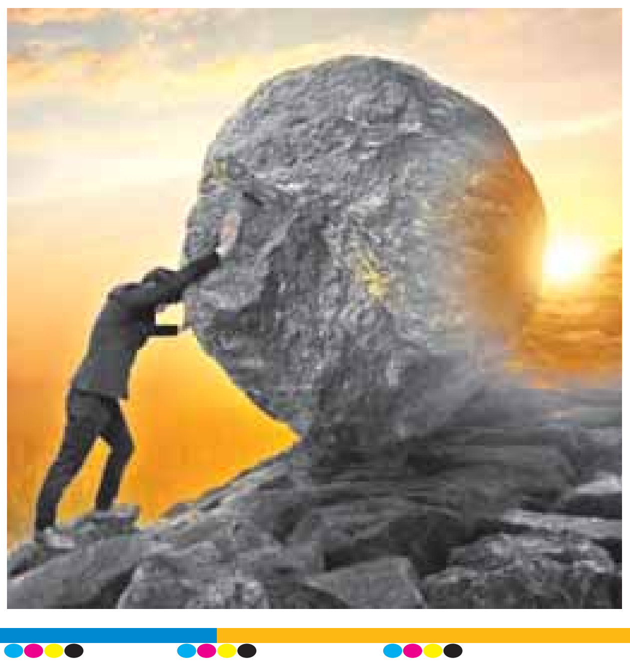

बनाने के लिए भईया लुट गए उन्हें अब बच्चों के कैरियर का ख्याल सताने लगा है। जबकि दोनों बेटों के बच्चे बड़े हो गए हैं और जॉब में हैं। दोनों बेटे आज भी भईया के खरीदे गगन चुम्बी फ्लैट में रहते हैं। उसकी किस्त भी भईया रिटायर्मेंट के बाद खुद की पेंशन से भरते हैं। लेकिन भईया -भाभी को साथ रखने के लिए दोनों के पास एक कमरा तक नहीं है। जबकि फ्लैट थ्री बीएचके है।

भईया की उमर पचहत्तर साल की हो गई है। लेकिन सेना में रहने की वजह से भईया आज भी स्वस्थ हैं। गाँव में उन्होंने बढ़िया घर बनवाया है। बाग़वानी भी उनकी अव्वल है। खेती-बारी बटाई पर दे दिया है। लेकिन भाभी के गठिया की वजह से घर में झाड़ू -पोछा भी वहीं करते हैं। बस, भाभी किसी तरह दो वक्त की रोटी बना देती हैं। वह भी रसोई से निकलने के बाद घंटे भर बिस्तर पर निढाल पड़ी रहती हैं। फिर भईया ही खाना -पीना लगाते हैं। भगवान की दया से सब कुछ होने के बाद जिंदगी किसी तरह घिसट रहीं है।

अर्से बाद हम भाभी को देखने गया तो रसोई से निकलती भाभी मुझे देखते ही बुलक -बुलक कर रो पड़ी। भाभी की पीड़ा का गुब्बार पूरी तरह से बाहर आ गया। वह खुलकर रो लेना चाहती थीं। हमने उन्हें किसी तरह पकड़ कर चुप कराया। कुछ देरतक माहौल में खामोशी छायी रहीं। थोड़ी देर के बाद भाभी खुद को संभालते हुए बोली।

÷देवर जी ! भगवान का दिया हुआ सब कुछ है फिर भी हम लोग दुःख भोग रहें हैं। लोग औलाद के लिए क्या नहीं करते। इसी उमर के लिए सबको औलाद चाहिए होती है न। लेकिन इस उमर में हमें कोई जली रोटी तक देने वाला नहीं है। फिर दो -दो बहुएँ और बेटे किस काम के। काहे की औलाद...। भाभी के सवाल का उत्तर हमारे पास भी नहीं था। मैं स्तब्ध और निश्शब्द था।... काहे की औलाद।

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अध्यात्म

बाबा श्री चंद जी-राष्ट्र एवं संस्कृति के संरक्षक

परविंदर शर्मा
अध्यक्ष एवं सहायक आचार्य,जगत गुरु नानक देव पंजाब स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी, पटियाला

भारत देश की संस्कृति शुरुआती चरण से ही ऋषि-मुनियों एवं गुरुजनों की धरती रही है। इस पवित्र धरती पर किसी न किसी महान तेजस्वी एवं बलवान का जन्म न्याय एवं धर्म को पुनर्स्थापित करने के लिए होता ही रहा है। जब भी कोई मुश्किल देशहित की संस्कृति पर आकर खड़ी हुई तब साथ के साथ उसके संमधान के लिए इस पवित्र धरती पर किसी ना किसी अवतारित रूप को जन्म लेना ही पड़ा है। माना जाता है कि भगवान विष्णु ने इस धरती पर 24 वार अवतार लेकर इसको पुनर्स्थापित किया था और आने वाले समय में भी जब भी इस धरती पर न्याय एवं धर्म के उपर मुसिबत बढ़ेंगी तो किसी न किसी महान शक्ति का आगमन होता ही रहे गया और पुनर भारतीय संस्कृति और सभ्यता को अपने हाथों से स्थापित करेंगे। इसी नाव के चालक का प्रकार लेकर गुरु नानक देव जी के बड़े सुपुत्र बाबा श्री चंद जी जो बाद में आध्यात्मिक गुरु के रूप में ही नहीं बल्कि विदेशी हमलावरों के खिलाफ देश को एकजुट करने वाले बने । जिन्होंने ने भारतीय संस्कृति को बचाने वाले महानायक का रूप धारण करके इस धरती पर अपनी आखे़ को खोल्या । जिस तरह बाबा नानक ने अपने जीवन में चारों दिशाओं में यात्राएं के समय देश-दुनिया में ज्ञान का प्रकाश डाला और मानवता को एक सूत्र में बांधने के लिए आथह प्रयास किया। इसी परम्परा को इस वंश के एक अंश जो बाबा श्री चंद जी के नाम से मशहूर हुए जिन्होंने दुनिया के चारों दिशाओं में यात्राएं कर यह साबित कर दिया था कि यह परंपरा अनके पिता द्वारा प्रचारित करने वाली अभी तक टूटी नहीं है। उन्होंने न केवल समाज को सर्वधर्म के प्रति जागरूकता के लिए प्रयास किए बल्कि ऐसी महान विभूतियों को भी देश में न्याय एवं धर्म की पुनर्स्थापित के लिए जतन किया जो उसे समय देश की संस्कृति को तोड़ने का प्रयास बाहरी लोग के साथ मिलकर कर रहे थे । इतिहास के मुताबिक मध्यकाल (750ई. से 1650) के बीच में भारतीय संस्कृति पर मुगलों (1250-1650) का अधिकार रहा था और वह अपने धर्म को स्थापित करने के लिए किसी भी हद तक जा रहे थे जब की भारतीय लोगों के ऊपर अनन्य कर रहे थे, सनातनी लोगों के ऊपर चुंगी, कर एवं टैक्स जैसे दंडित अपराध राजाओं ने लागू कर दिए थे । जिसके चलते लोगों को अपना जीवन निर्वाह करना मुश्किल हो गया था। भारत को एक ऐसा महानायक चाहिए था जो इसके विरुद्ध अपनी आवाज को बुलंद कर सके। वह सुपना बाबा श्री चंद जी ने मध्यकाल में आकर बाबा नानक के अंश के रूप में पुरा किया था। बाबा श्री चंद जी बचपन से ही विश्व भ्रमण करने के लिए घर से निकल पड़ते थे। बाबा जी के जन्म से ही अनके शरीर में धुनी की राख लगी हुई थी। उनके एक कान में मांस की मुंद्रा थी और माना जाता है कि दूसरे में उन्होंने अपने आप डाल ली थी। बाबा श्री चंद जी को भगवान शिव का अवतार भी माना जाता है। बाबा श्री चंद जी ने मुगलों एवं अन्य विदेशी शक्तियों के खिलाफ देश की स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ देश को पुनर उत्थान के रूप में आगे लाने का कार्य किया। उदासीन गुरु परंपरा में बाबा श्री चंद का पहला स्थान है जिनो ने उदासीन संप्रदाय का प्रचार-प्रसार गुरु नानक नंदन शिव शंभू श्री चंद महाराज की ओर से किया गया उन्होंने तिब्बत, कश्मीर, सिंध, काबुल, कांधर, बलूचिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान , गुजरात ,पूरी और कटक से लेकर विश्व के हर क्षेत्र में सनातन संस्कृति के वास्तविक स्वरूप से लोगों को अपने विचारों के साथ रूबरू कराया। बाबा श्री चंद जी ने अगनि देव को साक्षी मानकर तपस्वियों द्वारा तप करना भारतीय परंपरा में आदिकाल से ही प्रचलित रहा है इसी परंपरा का अनुसरण करते हुए उदासीन जगत में धुने का प्रचलन हुआ।इसी धुने की विभूति को उदासीन मुनियों ने अपने शरीर पर धारण कर निर्माण स्वरूप अपनाया । संवत् 1575 ई. में गुरुदेव गुरु अविनाशी द्वारा कश्मीर में विधिवत दीक्षित होने पर धूना उदासीन चार्य बाबा श्री चंद जी के जीवन का एक अंग बनकर रह गया। गुरु जी के बारे में लिखते हैं-

गुरु अविनाशी खेल रचाया ।
अगम निगम का पथ बताया।।
गुरु अविनाशी सूषम वेद।
निर्वाण विद्या अपार भेद।।

बाबा श्री चंद जी ने कश्मीर की धरती से ज्ञान की धारा को मन में उतरकर देश को एकजुट करने के लिए निकल पड़े और फिर वह फिर पीछे की तरफ नहीं मुड़े। बाबा श्री चंद जी ने हर एक क्षेत्र उत्तर-दक्षिण,पूर्व-पश्चिम में अपनी यात्रा की। उसे समय समाज के अंदर जो परिस्थितियों बनी हुई थी उसको बाबा श्री चंद जी भली-भांति जानते थे। बाबा श्री चंद जी ने अपनी सरलता सदागी के साथ हर एक वर्ग जो उसे समय अपने आप को अकेला एवं दुखी महसूस कर रहा था उसका उत्थान किया। बाबा श्री चंद जी जब भी किसी गांव में जाते तो वह उस गांव के बाहर अपना आसन लगाकर ध्यान मुद्रा में बैठ जाते थे और वहीं पर अपने साथ धूना जला लेते थे। फिर बाबा श्री चंद जी जब तक इस मुद्रा से बाहर नहीं निकल आते तो सांगत उन के पास आती रहती इस के बाद वह लोगों की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक स्थिति पर विचार करते थे। फिर उनका स्पष्टीकरण बताते थे । बाबा श्री चंद जी ने उस समय के समाज को सत्य के साथ परिचित करवाया। भगवान के उद्देश्यों से मिली नवीन स्मृति के माध्यम से ही वाममार्गियों की गिरफ्त में से उस समय के लोग छूट पाए। बाबा श्री चंद जी ने भारत देश की संस्कृति एवं पर्वतीय प्रदेशों की दशा सुधारने के लिए लगभग आनेको वर्ष तक भ्रमण कर सत्य का संदेश दिया। बाबा श्री चंद के आदेशों में कहीं ना कहीं सब सनातनियों को अपना इष्ट दिखाई देता है। क्योंकि उसे समय उनके बताए हुए सिद्धांतों को आकर्षण का मुख्य बिंदु माना जाता है। उसे समय के हिंदू शाशकों ने भी बाबा श्री चंद जी से आशीर्वाद प्राप्त करके और मन में दृढ़ता के साथ इस परिस्थितियों का सामना किया था। जिसमें राणा सांगा एवं महाराणा प्रताप जैसे हिन्दू वीरों को उपदेश दिया जोआगे चलकर देश की रक्षा के लिए कुर्बान होय थे। उन्होंने श्री राम जी की टिप्पणियों को स्पष्ट करते हुए कहा कि जिस प्रकार भगवान श्री राम जी ने भी धर्म के रास्ते पर चलकर विजय प्राप्त की थी और सच का साथ दिया था ।इसी प्रकार कह सकता हूं कि साहसी और उत्साहित जीव कभी भी अपने आप को अकेला महसुस ना करें , विजय हमेशा ही उनके चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लेती है।

इस प्रकार तुम्हारी भी यही स्थिति है। तुम्हारा मस्तक इन मुसलमान के सामने कभी भी झुकना नहीं चाहिए । क्योंकि ना तो कभी यह मस्तक किसी भारत की बहार वाली परम्परा के वपरीत दिशा में झुका है और ना आने वाले समय में झुकेगा। अपने को अकेले मत समझो पूर्ण समाज एवं भारतीय संस्कृति में रहने वाले हर वर्ग के लोग तुम्हारे अपने है और साथ हैं। ऐसे उत्साहित विचार बाबा श्री चंद जी ने उसे समय के मुख्य महानायकों के सामने रखें। जिसके चलते ऐसे महान शूरवीरता वाले नायक भारती संस्कृति एवं राष्ट को पुनः स्थापित करने में कामयाब हो सके। हम कह सकते हैं कि बाबा श्री चंद जी का भारतीय संस्कृति एवं समाज को पुनः स्थापित करने में मुख्य योगदान रहा है ।

कृषि संकट का समाधान तलाशती पुस्तक

पुस्तक चर्चा

नवीन कुमार
(समीक्षक)

भारत के कृषि संकट को लेकर किसान भी परेशान हैं और सरकार भी। लेकिन, कई दशकों के निरंतर प्रयासों के बाद भी इसका स्थाई समाधान नहीं निकल पाया। इसका कारण यह है कि समाधान का रास्ता हमेशा समस्या के तात्कालिक स्वरूप को देखकर निकाला जाता है। समस्या की जड़ों की पड़ताल नहीं की जाती। इसीलिए दीर्घकालीन समाधान नहीं निकल पाता।

यह बात वरिष्ठ पत्रकार सुशील भारती ने एनी बुक पब्लिकेशन से प्रकाशित अपनी शोधपरक पुस्तक 'कृषि संकट-जड़ें और समाधान' में कहीं। उन्होंने ऐतिहासिक संदर्भों के जरिए भारत की कृषि संस्कृति की विशिष्टताओं पर दृष्टिपात करते हुए ब्रिटिश हुक्मरानों की गलत नीतियों के कारण संकट के प्रस्थान बिंदु को समझा है। उसके विकराल रूप धारण करने के विभिन्न चरणों पर मंथन किया है।

आजादी के बाद संकट के समाधान के सरकारी प्रयासों और उनकी कमियों की भी समीक्षा की है। उन्होंने बताया है कि हरित क्रांति से समस्या का तात्कालिक समाधान अवश्य निकला, देश खाद्यान्न संकट से उबर गया लेकिन यह दीर्घकालीन संकट का जन्मदाता बन गया। रासायनिक खेती जन-स्वास्थ्य और मिट्टी की उर्वरता के लिए कितना नुकसानदेह साबित हुआ है, इसे बता है।इसके समाधान का रास्ता भी सुझाया।

निःसंदेह सुशील भारती का कृषि उद्योग से कोई सीधा संबंध नहीं है। वे न तो किसान हैं, न कृषि मंत्रालय के पदाधिकारी और न किसी कृषि विश्वविद्यालय के व्याख्याता या शोधकर्ता। वे एक जिज्ञासु पत्रकार हैं। हाल के किसान आंदोलनों से प्रभावित होकर उन्होंने इस विषय पर अध्ययन, चिंतन और मनन किया है और अपने निष्कर्षों को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया है।

वे विशेषज्ञ होने का दावा नहीं करते, लेकिन उन्होंने जो बातें कहीं हैं वह महत्वपूर्ण है और कृषि संकट को समझने और उसके समाधान की तलाश करने में मददगार हो सकती हैं। इसलिए किसानों, किसान संगठनों, कृषि मंत्रालय और कृषि क्षेत्र से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष किसी रूप में संबंधित होने वाले हर व्यक्ति के लिए यह जरूरी पुस्तक हो सकती है। इसे एक बार गंभीरता पूर्वक अवश्य पढ़ा जाना चाहिए। संभव हैं संकट के समाधान और कृषि संस्कृति के गौरवपूर्ण दौर की वापसी का रास्ता निकल आए। यह पुस्तक अमेजॉन, फ्लिपकार्ट आदि ऑनलाइन प्लेटफार्मों पर भी उपलब्ध है।

लेखक - सुशील भारती
प्रकाशक - एनी बुक पब्लिकेशन
मूल्य - 250 रुपए

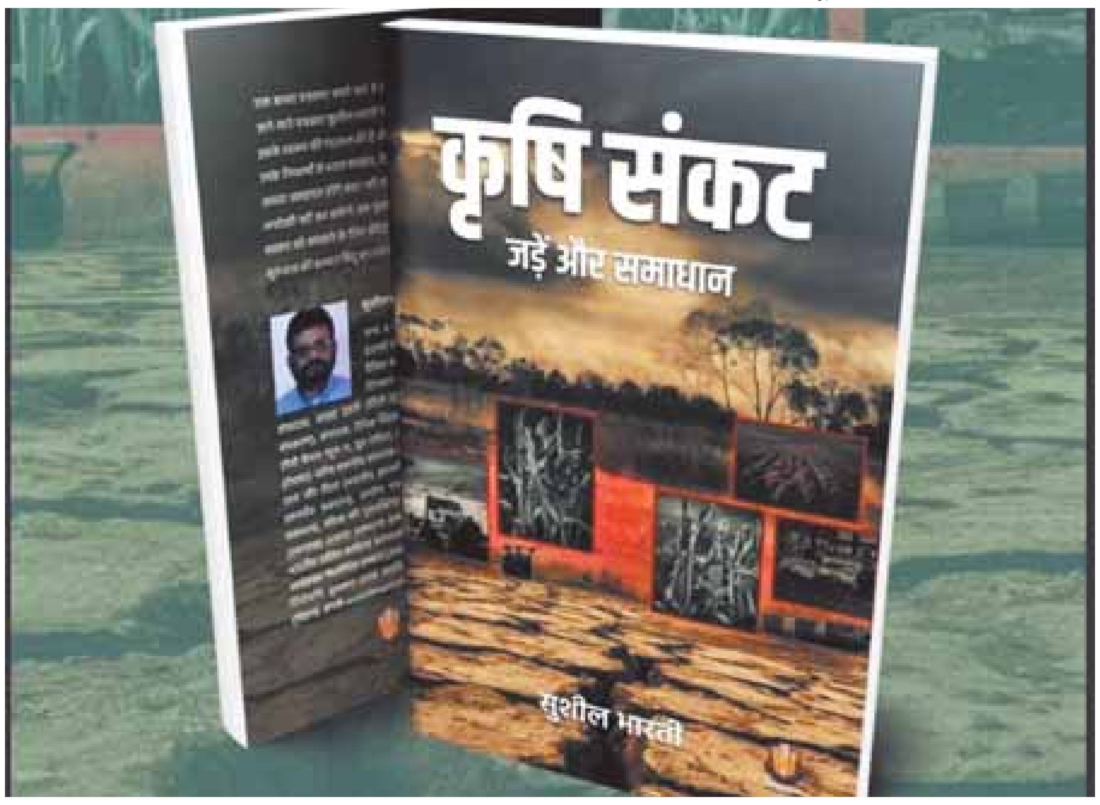

क्या हिंसा का अतिरेक भी लुभावना हो सकता है ?

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे
(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक है)

फिल्म- 'किल ' को अत्यंत हिंसक और रक्तरंजित फिल्म कहा गया है ।यह भी कहा गया है कि भारतीय सिनेमा की यह सबसे ज्यादा रक्तपात मचाने वाली फिल्म है। कमजोर दिल वालों को तो यह फिल्म बिल्कुल नहीं देखना चाहिए। हालांकि हॉलीवुड में हम 'बुलेट ट्रेन' और 'ट्रेन टू बुसान' जैसी फिल्मों में खूनी खेल देख चुके हैं, मगर निर्देशक निखिल नागेश भट्ट की 'किल' में नायक और खलनायक के बीच जिस तरह से रक्त की होली खेली जाती है, वो आपको न केवल हैरान कर देती है बल्कि अपनी सीट से हिलने नहीं देती। इस फिल्म को शुरु से अंत तक देखने के बाद यह सवाल स्वाभाविक रुप से उठता है कि क्या हिंसा का अतिरेक भी लुभावना हो सकता है? प्रदर्शनकारी कलाओं में सिनेमा के नौ रसों में से श्रृंगार, हास्य और करुण रस का ही बोलबाला ज्यादा देखने को मिलता रहा है, मगर बीते दिनों में 'एनिमल' जैसी हिंसक फिल्म के बाद वीभत्स रस के प्रति दर्शकों की रुचि जगी है और निर्देशक निखिल नागेश भट्ट की फिल्म अपने शीर्षक के मुताबिक मास किलिंग का एक ऐसा रचना संसार रचती है ,जहाँ दर्शक हक्का-बक्का हुए बिना नहीं रह पाता ।नईझपनी पिछली फिल्म अपूर्वा में नायिका का खूंखार रूप दिखा चुके निर्देशक की इस फिल्म को कई लोग हिंसा के ग्लोरिफिकेशन करने वाली फिल्म भी कह सकते हैं, मगर निर्देशक इस क्रूर रक्तपात को न्यायसंगत ठहराने वाले की पूरी कोशिश करते हैं कि सीमा पर दुश्मनों का सिर कलम करने वाले कमाण्डो ट्रेन के अन्दर रक्तपात मचाने को विवश क्यों हो जाते हैं अपनी पिछली फिल्म अपूर्वा में नायिका का खूंखार रूप दिखा चुके निर्देशक की इस फिल्म को कई लोग हिंसा के ग्लोरिफिकेशन करने वाली फिल्म भी कह सकते हैं, मगर निर्देशक इस क्रूर रक्तपात को न्यायसंगत ठहराने वाले की पूरी कोशिश करते हैं कि सीमा पर दुश्मनों का सिर कलम करने वाले कमाण्डो ट्रेन के अन्दर रक्तपात मचाने को विवश क्यों हो जाते है ?

फिल्म की कहानी एक खास ऑपरेशन से लौटे नेशनल सिक्योरिटी कमाण्डो अमृत राठौड़ (लक्ष्य) से शुरु होती है । जब लक्ष्य को पता चलता है कि उसकी प्रेमिका तूलिका (तान्या मानिकताला) की सगाई हो रही है, तो वह सगाई रोकने के लिए तूलिका के घर जाता है, मगर तब तक सगाई हो जाती है। अब तूलिका, उसके पिता बलदेव सिंह ठाकुर (हर्ष छाया) और उनका परिवार रांची से दिल्ली आने वाली ट्रेन में बैठता है। इसी ट्रेन में अमृत अपने कमाण्डो दोस्त अभिषेक चौहान (वीरेश चटवाल) के साथ सफर कर रहा है। सफर के दौरान अमृत तूलिका को वॉशरूम में अंगूठी पहनाकर शादी के लिए प्रपोज भी कर लेता है, मगर दोनों ही इस बात से अनजान हैं कि रास्ते में उनकी ट्रेन में नृशंस लुटेरों और हत्यारों का एक बहुत बड़ा जत्था चढ़ चुका है, जिसका सरगना है फणि (राघव जुयाल) जैसा राक्षस और उसका बेरहम पिता बेनी (आशीष विद्यार्थी)। ये लुटेरे कोई आम लुटेरे नहीं हैं बल्कि खून-खराबा करने वाला एक ऐसा गिरोह है, जिनके पास जैमर और मार -काट मचाने वाले खतरनाक हथियार भी हैं। लूटपाट के लिए किसी भी हद तक जाने वाले ये बीस नृशंस लुटेरे ट्रेन में खून की नदियां बहाना शुरू कर देते हैं, मगर लोगों का सामना करने के लिए ट्रेन में महज दो लोग अमृत और अभिषेक हैं। फिल्म में आद्योपांत हिंसा और केवल हिंसा है और दर्शकों की नई पीढ़ी जो इसे एंज्वाय करती है , उन्हें यह फिल्म अच्छी लगेगी ।।।

फिल्म की लम्बा इस फिल्म की एक बड़ी उपलब्धि है। निर्देशक प्रेम प्रसंगों को दिखाने में अपना समय और अपनी क्षमता को व्यर्थ नहीं गँवाते हैं । वे सीधे मुद्दे पर आ जाते हैं और उसके बाद यह फिल्म,कहानी और ट्रीटमेंट के माध्यम से बुलेट ट्रेन के समान गति पकड़ लेती है । कहानी में ब्रीदिंग स्पेस का न होना बुरी तरह से बेचैन कर देता है। ट्रेन के सीमित स्पेस में एक्शन सीन्स की कोरियाग्राफी गजब है और कहानी में बढ़ते लाशों के ढेर से पहले आप सदमे में आ जाते हैं, मगर फिर उसका हिस्सा बनकर वीभत्स रस का आनंद लेने लगते हैं। मरने-मारने वालों के शरीर को ऐसी-ऐसी जगहों से काटा-पीटा जाता है, जिसकी कल्पना भी आप नहीं कर सकते। राफे महमूद की सिनेमैटोग्राफी, शिवकुमार वी पानिकर की एडिटिंग, ट्रीटमेंट और बैकग्राउंड म्यूजिक भी दमदार है। फिल्म की एक्शन कोरियोग्राफी को येओंगओह-परवेज शेख ने सनसनीखेज तरीके से डिजाइन किया है, मगर हाँ इसकी शॉक वैल्यू आपको विचलित करने के लिए काफी है।

फिल्म में विलेन बने राघव जुयाल अपनी भूमिका को इतने मंत्रमुग्ध करने वाले अंदाज में निभा ले जाते हैं कि दर्शक उसके एक्शन को न्यायोचित करार देने लगते हैं। लक्ष्य के रूप में बॉलीवुड में एक नए एक्शन स्टार का उदय हुआ है, मगर खलनायक फणि के रूप में राघव जुयाल की नृशंसता, दैहिक भाषा और संवाद अदायगी आपको ज्यादा आकर्षित करती है। दोस्त अभिषेक के रूप में वीरेश चटवाल अच्छा-खासा साथ निभाते हैं। नायिका के रूप में तूलिका की भूमिका ज्यादा बड़ी नहीं है, मगर कहानी की दृष्टि से वही टर्निंग पॉइंट है और उसे तान्या मानिकताला ने खूबसूरती से अंजाम दिया है।बेनी की भूमिका में आशीष विद्यार्थी हमेशा की तरह शानदार रहे हैं। बलदेव सिंह ठाकुर बने हर्षा छाया अपनी उपस्थिति दर्शाते हैं।

कला

कलाकार इंद्रजीत की लंदन में प्रदर्शित होने वाली कृतियां

पंकज तिवारी
कला समीक्षक

रंगों का खुरदरापन कभी-कभी जीवन के खुरदरेपन को निहायत ही सादगी के साथ प्रस्तुत कर जाता है। जीवन संघर्षों से भरा तो होता है पर कलाकार, फोटोग्राफर इसी के बीच से कुछ ऐसे पल अचानक से समेट लाता है या यूं कहें कि लगातार नजरें गड़ाए हुए अपने जरूरत के हिसाब से परिस्थिति को खोज लाता है जो संघर्ष के बाद ही प्राप्त हो पाता है पर प्राप्त हो जाने के बाद वही संघर्ष सहर्ष आनंद दायक पल में बदल जाता है और कलाकार अपने सृजन पर आत्ममुग्ध होते हुए भी, समाज को बहुत कुछ देना भी चाहता है तो औरों को बहुत कुछ दे भी जाता है। दृश्य, विषय, रेखाओं, आकारों में पलक झपकते ही कई गुना परिवर्तन हो जाता है, धूप छांव के प्रभाव से वस्तुओं में अर्थ का अनर्थ या अनर्थ का अर्थ जैसा बदलाव आ जाता है। पलक झपकते ही प्रभाव अप्रभावी हो जाता है तो अप्रभावी वस्तु भी इतना प्रभावित कर जाती है कि जीवन भर के लिए नैनों से होते हुए दिल तक पहुंच कर अपना स्थान सुनिश्चित कर लेती है। कलाकार इंद्रजीत सिंह ग्रोवर जिनके कलाकृतियों की प्रदर्शनी 16 से 20 सितंबर तक लंदन में होने जा रही है, के कृतियों में भी गज़ब की सम्मोहन शक्ति है। पल भर के परिवर्तन को देखने का इनका नजरिया अपना नजरिया है जो बेहद ही तीक्ष्ण है। कैमरे के क्लिक पर आधारित कृतियों के सर्जक कहे जा सकते हैं कलाकार इंद्रजीत। कृतियों के सृजन में यांत्रिक प्रयोग का भी सहारा सा नजर आता है यहां पर इन सबों से अलग इनके कृतियों में दर्शकों को घण्टों बांधे रखने की शक्ति है।

चटख रंग, बड़े-बड़े स्पैचुला के लगाए गए निडर स्ट्रोक और बेतरतीब, बेहिसाब किन्तु अर्थवान पैचेज से बनी कलाकृतियां प्रकाश के प्रभाव से पूरी तरह से प्रभावित हैं। कलाकार का मानना है कि उनकी कृतियां प्रभाववाद के नजदीक या उससे प्रभावित जरूर लगती हैं पर उसके विचारों या वाद के प्रभावों से इसका कोई लेना देना नहीं है। कृतियों के निर्माण में कैमरे का सहारा लिया गया है जिसे कलाकार सहर्ष स्वीकार करते हैं और कहते हैं कि पलक झपकते विषयवस्तुओं पर जो प्रभाव पड़ता है, जो बदलाव आता है और जिसका एहसास उसी पल किया जा सकता है और रोमांचित हुआ जा सकता है, जो उस छड़ को खो दिया होगा वो उसके नजदीक भी नहीं पहुंच पाएगा या ऐसे रोमांचक पलों से बेखबर रह जाएगा के लिए ये कलाकृतियां बहुत ही सहारा बनती हैं और इसी बहाने कलाकृतियों के दर्शन और सौंदर्य बोध से आम नेत्र भी रूबरू हो जाते हैं। लोग ऐसे कृतियों में अपने अधूरे ख्वाहिशों को पूरा होते हुए भी देख पाते हैं। आम नजरें जो कृतियों में सिर, पैर और हाथ को खोजने के साथ जुड़ने का प्रयास करता है उनके लिए तो यहां निराशा ही है पर आशा इस बात की है कि वो नजरे भी यहां हाथ, पैर और सिर पर अलग-अलग ध्यान ना देकर पूरे कृतियों से एक साथ संवाद करेगी और भाव तक आसानी से पहुंच सकेगी। जुड़ सकेगी पूरे परिप्रेक्ष्य से। कलाकार के विचार या उससे अलग होते हुए भी वो कृतियों से एकाकार हो सकेंगे।

कलाकार इंद्रजीत सिंह के कला के दुनिया में प्रवेश को लेकर बड़ी स्पष्ट झलक नहीं दिखाई देती बल्कि भटकन कुछ ज्यादा ही नजर आती है। कलाकार बनने से पहले कई और रूपों में वो लोगों के सामने हाजिर हुए या कह सकते हैं कई विधाओं में सक्रिय रूप से भागीदारी सुनिश्चित कर चुकने के बाद लोगों के सलाह पर दृश्य कला के दुनिया में इनका प्रवेश सुनिश्चित हो सका। शुरू में दृश्यकला के बारे में जानकारी का अभाव या उधर ध्यान ना देने का असर, सच्चाई जो भी रही हो पर वही भटकन बाद में जब ये दृश्यकला के हो गये, बहुत काम आई। रंगों, आकृतियों, वस्तुओं के संयोजन में भी उसकी झलक साफ नज़र आती है। सामान्य बच्चों के भांति सामान्य विषयों के साथ कॉलेज के अध्ययन में अंदर से दृश्यकला के प्रति प्रेम के अंकुरण का असर रहा कि और विधाओं में भी विशेष होने के बावजूद दृश्यकला का पलड़ा भारी पड़ा और बाकायदा इधर ही सीखने-सिखाने का उपक्रम पूरा हुआ। निरंतर अभ्यास अध्ययन के बाद भी भटकन इनके यहां जारी रहा, मंचीय प्रभाव से खुद को बचाने का प्रयास करने के बाद भी बचा नहीं सकते थे फलतः एकाग्रता भंग होती रही पर कृतियां निर्मित होती रहीं। कला को लेकर इनकी भूमिका आगे भी संतोषजनक नहीं रही

ऐसा प्रतीत होता है कार्यक्रमों के संचालन में विशेष भूमिका, कार्यक्रमों के संयोजन में भी विशेष भूमिका या और सारी कलाओं के चक्कर में कला के साथ न्याय ना कर पाने की विवशता इनके अपने जुबान पर रहती है जो इमानदारी के साथ मान लेना विशेष महत्व रखती है। इन सभी के बावजूद एक कार्य जो सुकून देने वाला है वो ये कि इतने भटकन और जद्दोजहद से गुजरने के बाद भी इनके पास विशेष-विशेष कलाकृतियों का विशेष संकलन है। लाजवाब कृतियां हैं इनके पास जो कला को लेकर इनके अपने समृद्धता को भी दर्शाती है और कहा जा सकता है इन सभी के बावजूद कृतियों की कंगाली नहीं है यहां।

ब्रश का प्रयोग बिल्कुल ना के बराबर करने वाले कलाकार के विचार भी बेहद ही खुले हैं, कैनवास पर खुल कर गिरे रंगों की भांति। अपनी बात बड़ी ही बेबाकी से रखने में माहिर हैं कलाकार इंद्रजीत वैसे ही कैनवास भी बेबाकी से बतियाते हैं दर्शकों से। 24 वर्षों तक प्रवक्ता के पद पर बने रहने के बाद एनडीएमसी के शिक्षा विभाग एवं इवेंट मैनेजमेंट में उप निदेशक, दक्षिण मध्य सांस्कृतिक क्षेत्र में डायरेक्टर इंचार्ज तथा उत्तर मध्य सांस्कृतिक क्षेत्र प्रयागराज में निदेशक के पद पर होते हुए खुद से और दूसरे कलाकारों के माध्यम से भी कला को काफी समृद्ध करने का मौका मिला और आप ने अपने काम को काफी समृद्ध भी किया निरंतर कुछ विशेष करने के प्रयास से। एकल प्रदर्शनियों एवं सामूहिक प्रदर्शनियों के साथ ही अन्य विधाओं में भी सक्रिय भागीदारी रही है जो अभी भी जारी है और जिसका ताजा उदाहरण लंदन में लगने वाली कला प्रदर्शनी है। इनके कृतियों में संगीत के स्वर लहरियों को भी महसूस किया जा सकता है। नृत्य संगीत भी प्रिय विषय रहा है इंद्रजीत के कृतियों का। 17 जुलाई 1964 को जन्मे कलाकार इंद्रजीत सिंह ग्रोवर अपने लंदन के प्रदर्शनी को लेकर काफी उत्साहित हैं और एक से बढ़कर एक कृतियों के सृजन में रमें हुए हैं। लोगों से उम्मीद भी रखते हैं कि लोग उनसे और उनके कृतियों से जरूर जुड़ें।

नौकरी के समय, समय की कमी होने के चलते कई बेशकीमती कलाकृतियों का निर्माण, जिनका निर्माण इनके हाथों होना चाहिए था, नहीं हो सका जिसका उन्हें दुख भी है और उसी के भरपाई हेतु अब निरंतर अपने साधना में रमें हुए हैं। अभी हाल ही में गुड़गांव के विमला आर्ट फोरम ने इंद्रजीत सिंह के कृतियों का प्रीव्यू शो आयोजित किया जहां उन्होंने अपने कृतियों, विधाओं एवं सृजन प्रक्रिया पर खुल कर चर्चा करी, लोग खूब सारे प्रश्न उनके सामने रखें जिससे कार्यक्रम में जीवंतता आ गई, जहां दिलीप शर्मा, कंचन पाठक, पंकज तिवारी सहित कला के और भी विशिष्ट लोग मौजूद रहे। कला और नौकरी को एक साथ साध पाने के बाबत उनका कहना था कि थोड़ा मुश्किल तो है पर न्याय दोनों के साथ किया जा सकता है, डिपेंड करता है कलाकार के इच्छाशक्ति पर जो जितना मजबूत होगा वो अपने दोनों प्रकार के कर्तव्यों के बीच आसानी से सामंजस्य बिठा पायेगा, मैं तो फिलहाल बैठा लेता हूं। कभी भी किसी एक कार्य को लेकर मुझे ग्लानि नहीं हुई?। मैं खुशनसीब हूं कि मुझे एक साथ कई विधाओं में भटकते हुए जीने का मौका मिला और मैं उसे बखूबी निबाह पा रहा हूं।इंद्रजीत के कृतियों में चटख रंगों का भारी-भरकम प्रयोग है तो मूर्तन-अमूर्तन के बीच द्वंद्व भी है, बड़े-बड़े अस्तित्व रहित धब्बे एक साथ होकर अस्तित्वमयी रचना संसार गढ़ते हैं तो जरूरत से ज्यादा असमंजस की स्थिति भी पैदा करते हैं। इनके यहां के आकृतियों को अनुभूति के बाद ही बढ़िया से पढ़ा जा सकता हैं तो जरा सा भटक जाने के बाद घण्टों लड़ने के बाद ही कृतियों के जड़ तक पहुंचा जा सकता है, हालांकि किसी भी कृतियों के जड़ तक पहुंचा भी जा सकता है या नहीं प्रश्न है। पीले और भूरे रंगों की अधिकता है तो कालिमा का भी प्रयोग नजर आता है। उनके कृतियों में गांव हैं, शहरों की गलियां हैं, बनारस का घाट है तो मनुष्य के जीवन का संघर्ष भी है। चित्र संयोजन अस्त-व्यस्त होने के साथ ही प्रबल प्रभावयुक्त है। अंग-प्रत्यंग, व्यवस्थित माप या आकार में बंधे न होने के बावजूद गतिशील हैं। कृतियों को देखते समय आंखें स्वतः ही गतिशील हो उठती हैं, उनका एक जगह रुक पाना मुश्किल हो जाता है। दर्शक इनके कृतियों से बहुत जल्दी जुड़ जाते हैं।

भैंसदेही एवं भीमपुर ब्लॉक की तीन पंचायतों में 4 करोड़ खर्च, फिर भी ग्रामीण प्यासे

बैतूल/भैंसदेही। जिले के भैंसदेही एवं भीमपुर ब्लॉकों में नलजल योजना के हालात लगभग एक जैसे हैं। आदिवासी ब्लॉक भीमपुर के बाद इससे सटे भैंसदेही ब्लॉक में भी नलजल योजना पर करोड़ों रुपए खर्च हो चुके हैं, लेकिन पीएम नरेंद्र मोदी का हर घर तक पानी पहुंचाने का संकल्प शासकीय अधिकारियों से मिलकर ठेकेदार वित्तीय अनियमितता करके किस तरह चकनाचूर कर रहे है, इसका उदाहरण इस आदिवासी ब्लॉक में आसानी से देखने को मिल जाएगा। हालातों पर नजर डाले तो ब्लॉक के ग्रामीण पानी के लिए तरस रहे हैं।, वंही टंकी कबाड़ बन रही है तो पाइप लाइन लोगों के घरों पर लटकी हुई हैं। दिखाने के लिए बिजली के ट्रांसफार्मर लगा तो दिए, लेकिन इन्हें अब तक चालू तक नहीं किया जा सका है, कहने को इस योजना को लेकर कमिश्नर ,कलेक्टर लगातार दौरे कर रहे हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर खराब हालात सुधर पाएंगे या दोषियों के खिलाफ आपराधिक प्रकरण दर्ज कर उन्हें जेल की हवा खिलवाई जाएगी, यह सब भविष्य के गर्भ में समाया हुआ है।

3 पंचायतों में 4 करोड़ खर्च करने के बावजूद हालात खराब- भैंसदेही ब्लॉक की बोरगांव, बासनेर खुर्द और झल्लार ग्राम पंचायतों में वर्ष 2022 से अभी तक नलजल योजना में करीब 4 करोड़ रुपए खर्च किए जा चुके हैं। 326 परिवारों की बस्ती बोरगांव में संपवेल बनाने के साथ ट्रांसफार्मर भी लगाया गया है लेकिन विडंबना यह है कि यह ट्रांसफार्मर अभी तक चालू नहीं किया जा सका है। ठेकेदार ने सीमेंट के वाल्व चेंबर तक नहीं बनाए और वॉल्व में सीधा पाइप जोड़कर उसे छोड़ दिया है। बांसनेर खुर्द ग्राम पंचायत में भी कुछ इसी तरह

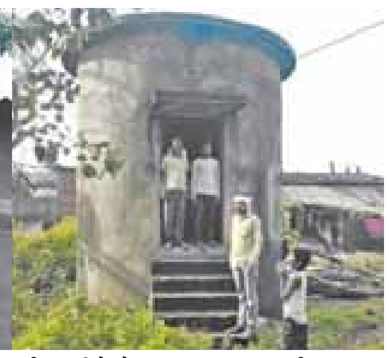

नल-जल योजना को पूरी तरह धराशाई कर दिया गया। लोगों के घरों पर लटके खाली पाइप इसकी गवाही खुद दे रहे हैं कि ग्रामीणों को पीने का शुद्ध पानी मिल पा रहा है या नहीं। लोग आज भी पानी के उन्हीं पुराने जलस्त्रोतों पर निर्भर हैं, जहां से उन्हें दूषित पानी मिल रहा है। इस योजना में बड़े स्तर भ्रष्टाचार किया गया है। स्टेट हाइवे से सटी ग्राम पंचायत झल्लार में तो हद ही पार कर दी। ग्रामीणों ने इसका खुलासा करते हुए बताया कि ग्राम पंचायत में लगभग 10 वर्ष पूर्व पात्रा योजना के तहत पानी सप्लाई के लिए काम किया गया था। इसके बाद वर्ष 2022 में जब नलजल योजना का काम शुरू किया गया, तो ठेकेदार ने पात्रा योजना के तहत बिछाई गई पाइप लाइन सहित कुछ कार्यों को कर नया काम बता दिया और अधीकारियों ने भी आंख बंद कर इस पर यकीन भी कर लिया और लाखों रुपए का भुगतान ठेकेदार को कर दिया। जबकि नलजल योजना में ठेकेदार को पूरा काम ही नए सिरे से करना था। झल्लार बड़ी ग्राम पंचायत होने से यहां करीब दो लाख लीटर की पानी की टंकी बनाई और घरों तक पाइप लाइन बिछाकर छोड़ दी, लेकिन टंकी से कनेक्शन ही नहीं जोड़े गए और आज भी योजना मूर्त रूप नहीं ले सकी है। सरकारी योजना का शत प्रतिशत लाभ ग्रामीणों को मिल सके, इसके लिए मुख्यमंत्री ने कुछ ही दिनों पहले सभी कमिश्नरों और कलेक्टरों को निर्देश दिए थे। मुख्यमंत्री के निर्देश के बाद कमिश्नर और कलेक्टर ने भीमपुर, भैसदेही ब्लाक का निरीक्षण भी किया था, लेकिन इन दोनों ही ब्लॉकों में पीएचई अधीकारियों की ना मौजूदगी इस बात का सबूत है कि केन्द्र सरकार की इस महत्वपूर्ण योजना को लेकर अधिकारी गम्भीर नहीं हैं। बताया जा रहा है कि जिले में नलजल योजना में की गई भारी वित्तीय अनियमितताओं को लेकर अब कुछ जागरूक नागरिक मय दस्तावेजों और सबूतो के साथ सीधे मुख्यमंत्री, प्रभरी मंत्री को शिकायत करने का मन बना चुके हैं। वित्तीय अनियमितताओं की जांच अब सीधे ऊपर की एजेंसियों के माध्यम से कराई जाए, तो भ्रष्टाचार करने वाले अधिकारियों और ठेकेदारों को उनकी करनी की सजा मिल सके।

इनका कहना

जो ठेकेदार काम नहीं कर रहे है। उन्हें ब्लैक लिस्टेड कर रहे है। इसी तारतम्य में 11 गांव के 3 ठेकेदारों को ब्लैकलिस्टेड भी किया जा चुका है और रही बात झल्लार, बोरगांव की तो यहां काम अधूरा होने से रिवाइज में है। इनकी स्वीकती अपेक्षित है जो भी ठेकेदार काम नहीं करेंगे उन्हें ब्लैकलिस्टेड कर नया टेंडर निकाला जाएगा।

- **आरएल सैकवार,** इई पीएचई बैतूल

अब तो सीएमओ भी दबाने लगी कागजात..

कोई तो है आवाज उठाने वाला..

नर्मदापुरम (नप्र)। नगरपालिका के नाम दर्ज 15/1 का अतिक्रमण नगरपालिका आज तक नहीं हटा पाई और अब उसने राजीव गांधी आश्रय योजना के पट्टे पर बने अवैध मेडिकल स्टोर को हटाने का नोटिस दिया है ..! विधायक के भाई के अतिक्रमण को हटाने में नाकाम नगरपालिका अधिकारी ने पूर्व सांसद के संरक्षित को अवैध दूकान हटाने को नोटिस दिया है..! मीनाक्षी चौक स्थित नाले पर बने रायल मेडिकल स्टोर को हटा पाने में प्रशासन ने तो घुटने टेक रखें लेकिन मुख्य नगरपालिका अधिकारी हेमेश्वरी पटले ने अवैध दुकान अतिक्रमण बताते हुए नोटिस जारी करने का साहस तो किया पर सवाल है कि बधाई की पात्र कही जा रही मुख्य नगरपालिका अधिकारी हेमेश्वरी पटले इस अतिक्रमण को हटाने में कामयाब हो पायेगी या फिर उन्होंने मात्र खानापूर्ति के लिए यह नोटिस निकलवाया है..? क्योंकि 4 जुलाई को

रमीज अली रायल केमिस्ट दुकान वार्ड नं 17 को जारी कर दुकान नाले पर अतिक्रमण कर बनाई स्पष्ट लिखा है साथ में चेतावनी, दुकान के समस्त दस्तावेज लेकर 24 घंटे में निकाय में उपस्थित हो अथवा अतिक्रमण हटा कर निकाय को सूचित करें अन्यथा निकाय द्वारा वैधानिक कार्यवाही की जावेगी। नोटिस देने के बाद आज 70 दिन यानी 1680 घंटे बीत चुके नगरपालिका उसके विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं कर पाई जो प्रशासनिक अकर्मण्यता का नमूना ही समझ आ रहा. ! राजीव गांधी आश्रय योजना का पट्टा खरीद कर बनाई यह दुकान पूरी तरह अवैध है। मामले में जिला प्रशासन की निष्क्रियता संदिग्ध नजर आती है। मीनाक्षी चौक व्यस्तम इटारसी मार्ग के यातायात को प्रभावित करने वाले इस अतिक्रमण को हटाने में आखिर प्रशासन को रुचि नहीं क्यों..? जबकि इस क्षेत्र में घंटों जाम लगना आम बात है। पूर्व नपाध्यक्ष वर्तमान पार्षद श्रीमती मीना वर्मा स्पष्ट कहती हैं कि उनके अध्यक्षीय कार्यकाल में इस जगह राजीव गांधी आश्रय योजना के तहत आवासहीनों को आवासीय पट्टे दिए थे। इन पट्टों का नियमानुसार न तो हस्तानांतरण किया जा सकता है, ना पट्टे का व्यवसायिक उपयोग, न पट्टे का खरीद फरोख्त..? यहां तो फारेस्ट रेस्टहाउस की पुलिया तक ढेरों व्यवसायिक प्रतिष्ठान निर्मित हो चुके आखिर इन्हें निर्माण करने की अनुमति नगरपालिका से कैसे मिल गई.? या सभी अवैध निर्माण है। कुछ भी हो यह पूरा मामला बेहद गंभीर ही नहीं सरकारी योजनाओं की विश्वसनीयता पर ही नहीं प्रशासनिक अधिकारियों की कर्तव्य निष्ठा पर सवाल उठाता है.. सरकारी नुमाइंदों को आखिर मोटी तनख्वाह देकर नियुक्त किस लिए किया जाता है। पूर्व नपाध्यक्ष और वर्तमान पार्षद मीना वर्मा इस मामले की जांच और दोषियों के विरुद्ध एफआईआर करने की बात कहती हैं।

हिन्दी केवल भाषा ही नहीं विरासत भी है - डॉ.जोशी

नर्मदापुरम। मध्यप्रदेश उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार शासकीय नर्मदा महाविद्यालय में हिन्दी दिवस के अवसर पर व्याख्यानमाला, प्रदर्शनी एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य डॉ. अमिता जोशी, मुख्य अतिथि डॉ. संतोष व्यास, विशिष्ट अतिथि प्रदीप दुबे एवं अन्य प्राध्यापकों द्वारा मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया । विषय-प्रवर्तन करते हुए डॉ. के जी मिश्र ने शब्द के ब्रह्म स्वरूप को व्याख्यायित किया एवं शब्द-विवेक की आवश्यकता रेखांकित की । तत्पश्चात विशिष्ट अतिथि एवं स्थानीय कवि प्रदीप दुबे ने ÷अपनी बोली छोड़ गए÷ कविता के माध्यम से हिन्दी की वर्तमान स्थिति पर चिंता व्यक्त की । मुख्य अतिथि डॉ. संतोष व्यास ने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा के संवर्धन मे हिन्दी भाषा की भूमिका पर अपनी बात रखी । प्राचार्य डॉ. अमिता जोशी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में हिन्दी के प्रति आत्म गौरव का भाव रखने एवं इसके अधिकाधिक

प्रयोग करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया । अभय अमोले, निशा हरियाले आदि विद्यार्थियों ने इस अवसर भाषण एवं गीतों की प्रस्तुतियाँ दीं । आभार प्रदर्शन डॉ. हंसा व्यास एवम मंच संचालन डॉ. दिनेश श्रीवास्तव ने किया । इस अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में शुभी जोशी प्रथम, महक पटवा द्वितीय, कुनाल मालवीय एवं करन सिंह तृतीय स्थान पर रहे । कार्यक्रम में डॉ. कमल वाधवा, डॉ. बी एस आर्य, डॉ. सविता गुप्ता, डॉ.कल्पना विश्वास , डॉ. प्रीति उदयपुरे, डॉ. शोभा बिसेन , डॉ. जयश्री नंदनवार, डॉ. रवि उपाध्याय, जयसिंह ठाकुर आदि प्राध्यापकों के साथ बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

नेत्र शिविर आज से

बैतूल। स्व. डॉ. जेएच तिवारी की स्मृति में वरिष्ठ नागरिक संगठन जिला बैतूल के तत्वावधान में आज रविवार 15 सितम्बर को 11 बजे से 1 बजे तक बीजादेही में नेत्र शिविर का आयोजन किया गया है।

दो बुजुर्ग की निर्मम हत्या, जताया जादू टोना का शक,,दोनों मृतक रिश्ते में समधी थे,

बैतूल। जिले के चोपना थाना क्षेत्र मे डबल मर्डर से सनसनी फैल गई है। यहां जंगल में झोपड़ी बनाकर रह रहे दो बुजुर्गों की कुल्हाड़ी से काटकर निर्मम हत्या कर दी गई है। नीलगढ़ गांव के जंगल में झोपड़ी बनाकर रह रहे धनु धुर्वे (65 साल) निवासी पुत्तीढाना व उसके समधी विस्सू परते (60 साल) के शव जंगल मे बनी झोपड़ी के पास मिले हैं। दोनों की धारदार हत्यार से मारकर हत्या की गई है। परिजनों ने जादू-टोने के शक में हत्या की आशंका जताई है।

जिला स्तरीय खेलकूद एथलेटिक प्रतियोगिता

सरस्वती शिशु मंदिर सोहागपुर के छात्र छात्राओं ने बनखेड़ी में 'एथलेटिक' प्रतियोगिता में लहराया परचम

हीरालाल गोलानी सोहागपुर

सरस्वती शिशु मंदिर सोहागपुर के छात्र छात्राएं हमेशा खेलकूद प्रतिस्पर्धा में अव्वल रहकर विधालय का नाम रोशन करते हैं।इसी तारतम्य में बनखेड़ी के केशवनगर में जिला स्तरीय खेलकूद 'एथलेटिक्स' प्रतिस्पर्धा में परचम लहराया।इस प्रतियोगिता में भी सरस्वती विद्या मंदिर के भैया बहनों ने कठिन परिश्रम कर अपना दबदबा कायम रखा ।इस जिला स्तर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने बाले भैया बहनों शिवम् कहार तरूण वर्ग100 मीटर दौड़ एवं 110 मीटर बाधा दौड़ प्रथम, श्रेयांस पुरविया - शिशु वर्ग100 मीटर दौड़ -प्रथम ,सरस रघुवंशी -शिशु वर्ग 200 मीटर -प्रथम,रेखराज गुर्जर किशोर वर्ग,हेमर फेक - प्रथम, तारा सिंह धानक किशोर वर्ग --1500 मीटर दौड़ -प्रथम , 400 मीटर दौड़ बाधा -प्रथम,शौर्य दीक्षित किशोर वर्ग-100 मी दौड़ - प्रथम एवं 200 मीटर लम्बी कूद प्रथम,तेजस्विनी शर्मा -(बाल वर्ग)- 100 मी दौड़ प्रथम

संध्या कुशवाहा किशोर वर्ग 3 हजार मीटर दौड़ -प्रथम, रूबी पाल किशोर वर्ग200 मी दौड़ प्रथम,निधी रघुवंशी किशोर वर्ग 400 मीटर दौड़ प्रथम एवं भाला फेंक प्रथम, कनिष्का शिशु वर्ग -100 मीटर दौड़ प्रथम 200 मीटर दौड़ प्रथम एवं लम्बी कूद --प्रथम स्थान प्राप्त किए हैं। उल्लेखनीय है कि सरस्वती शिशु मंदिर के खेल शिक्षक पंचम नागवंशी तथा निकिता कुशवाहा ने भैया बहनों को प्रतियोगिता का प्रशिक्षण प्रदान किया था।

सरस्वती शिशु मंदिर के प्राचार्य अशोक कुमार दुबे ने बताया कि सरस्वती शिशु मंदिर केशव नगर में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को विभाग स्तर पर बैतूल में आयोजित प्रतिस्पर्धा में सहभागिता करने का अवसर मिला है। विभाग स्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता बैतूल में दिनांक 16 सितंबर से आयोजित की गई है। प्रतिभागियों को बनखेड़ी में प्रमाण पत्र एवं मेडल अतिथियों ने प्रदान किए थे। सरस्वती शिशु मंदिर की नेताजी सुभाष चंद्र बोस शिक्षा समिति के अध्यक्ष कन्नूलाल अग्रवाल, उपाध्यक्ष अभिषेक जैन ,सचिव राजा भैया पटेल ,व्यवस्थापक कृष्ण कुमार पालीवाल, कोषाध्यक्ष संजीव दुबे ,प्राचार्य अशोककुमार दुबे के अलावा विद्यालय के आचार्य एवं दीदियों ने शुभकामनाएं देकर उनके के उज्जवल भविष्य की कामना की है ।

डोल ग्यारस पर भगवान श्रीकृष्ण को बिठाकर कराया नगर भ्रमण

पंचामृत, दुग्धाभिषेक, पूजन, अनुष्ठान के बाद लगाया भोग

बैतूल। युवा साहू समाज सेवा संगठन एवं शिव शिवांश सेवा समिति के

तत्वावधान में डोल ग्यारस एवं परिवर्तन एकादशी के अवसर पर शिव मंदिर विनोबा नगर बैतूल में भगवान श्रीकृष्ण को डोले में बिठाकर शिव मंदिर विनोबा नगर से लीला बाबा मंदिर तक भ्रमण कराया गया एवं यहां पर आरती की गई। इसके बाद डोले में विराजित भगवान श्रीकृष्ण वापस शिव मंदिर प्रांगण में पधारे और यहां पर भगवान श्रीकृष्ण का पंचामृत एवं दूध, दही, घी, शहद, शक्कर से भगवान का अभिषेक किया गया एवं परिवर्तनी एकादशी की कथा का वाचन पं. नरेंद्र दुबे के द्वारा किया गया।

श्री सिद्धि विनायक मंदिर में होगी आज महाआरती

सुबह सवेरे सोहागपुर। सोहागपुर नगर के बिहारी चौक में स्वगीर्य गुलाबचंद खंडेलवाल के पिताश्री स्वगीर्य मूलचंद खंडेलवाल परिवार को नगर में प्रथम गणेश प्रतिमा स्थापित करने का श्रेय प्राप्त है। इसी तारतम्य में स्वगीर्य गुलाबचंद खंडेलवाल ने स्टेशन रोड खंडेलवाल कालोनी में श्री सिद्धि विनायक गणेश मंदिर में स्थापना करवाई। वहीं उनके पुत्र ने श्री सिद्धि विनायक मंदिर परिसर में ही श्री नर्मदेश्वर महादेव की स्थापना विगत वर्ष कराई थी। इसी तारतम्य में 15 सितंबर को महाआरती एवं महाप्रसाद भंडारा का आयोजन सायं 7.45 को किया है। श्रीमति अनुपमा अभय खंडेलवाल ने सभी धर्मप्रेमियों से आयोजन में शामिल होने की अपील की है।

हनुमान चालीसा 1108 का आयोजन- खंडेलवाल कालोनी में पूर्व प्रदेश भाजपा प्रवक्ता सुश्री

राजो मालवीय , मनोज मालवीय एवं नमन मालवीय के निवास पर श्री गणेश जी की प्रेरणा से 1108 हनुमान चालीसा पाठ आयोजन किया गया। इस आयोजन में खंडेलवाल कालोनी निवासियों के अलावा कई धर्मप्रेमियों ने उत्साह से हनुमान चालीसा कार्यक्रम में शामिल हुए।

डीईआईसी जिला चिकित्सालय बैतूल में क्लब फुट क्लीनिक का किया शुभारंभ

बैतूल। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के जिला शीघ्र हस्तक्षेप केंद्र जिला चिकित्सालय बैतूल में अनुष्का फाउंडेशन के माध्यम से शुक्रवार को क्लब फुट क्लीनिक का शुभारंभ किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ रविकांत उइके ने बताया कि क्लबफुट एक जन्मजात विकृति है, जिसमें पैरों के पंजे मुड़े होते हैं, यदि इनका शीघ्र हस्तक्षेप कर उपचार कर दिया जाए तो यह विकृति ठीक हो जाती है। इसका उपचार लंबे समय तक चलता है। पालकों को धैर्य रखकर अपने बच्चों का उपचार कराना चाहिए।

सिविल सर्जन डॉ.अशोक बारंगा ने बताया कि जिन बच्चों में इस प्रकार की तकलीफ है, वे अस्पताल में इलाज करवा सकते है। बच्चों को भविष्य की तकलीफ से बचाने हेतु बपचन से ही टेढ़े पंजों का इलाज करवाना चाहिए। इसका जिला चिकित्सालय एवं मेडिकल कॉलेज में निःशुल्क उपचार एवं सर्जरी की सुविधा उपलब्ध है। अस्थिरोग विशेषज्ञ डॉ. प्रकाश चंदेलकर ने बताया कि इसमें बच्चे के पंजे टेढ़े होते हैं, जन्म लेते ही उन्हें तुरंत दिखाना चाहिये। बड़े होने पर बच्चे के पैर के पंजे की कास्टिंग (प्लास्टर) की जाती है एवं आवश्यकता पड़ने पर सर्जरी द्वारा भी इसे ठीक किया जा सकता है।

स्पोर्टस में बैतूल को मध्यप्रदेश का अग्रणी जिला बनाएँगे : हेमन्त खण्डेलवाल

पारधी समुदाय के मेधावी खिलाडी जैकी को बैतूल विधायक ने किया सम्मानित

सब जूनियर मेन नेशनल हॉकी चैम्पियनशिप में हुआ चयनित

बैतूल / जिला मुख्यालय बैतूल स्थित पारधीढाना में पले - बढे वर्तमान में सोनाघाटी में निवासरत पारधी समुदाय के मेधावी खिलाड़ी जैकी पिता स्व.दिलीप सोलंकी का चयन चंडीगढ में आयोजित होने वाली सब जूनियर मेन नेशनल हाकी चैम्पियनशिप में म.प्र.की टीम के लिये हुआ है । खेल एवं युवा कल्याण विभाग तथा खेल संगठनों के संयुक्त तत्वाधान में शनिवार को मेजर ध्यानचंद स्टेडियम बैतूल में आयोजित कार्यक्रम में पारधी समुदाय के मेधावी खिलाड़ी जैकी सोलंकी को बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने सम्मानित कर उसका हौसला बढ़ाया। हॉकी खेल में बैतूल जिले का नाम राष्ट्रीय स्तर तक रोशन करने वाले खिलाडी जैकी को बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल ने 21 हजार रूपये सम्मान राशि देने की घोषणा करते हुये कहा कि जैकी सोलंकी की प्रतिभा को राष्ट्रीय- अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुचाने के लिये उनके द्वारा हर संभव मदद की जाएगी । कार्यक्रम को संबोधित करते हुये बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल ने कहा कि जिले के खिलाडियों को अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिये प्रयास किए जा रहे है । जिला मुख्यालय बैतूल की पहचान स्पोर्टस हब के रूप में बनाने के लिये यहॉ इन्डोर स्टेडियम,स्पोर्टस म्यूजियम,स्पोर्टस अध्ययन केन्द्र भी स्थापित किये जाएगें । जिससे बैतूल स्पोर्टस में मध्यप्रदेश का अग्रणी जिला बन सके ।

प्रतिभाओं को आगे लाना हम सभी की जिम्मेदारी- बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल ने कहा कि पारधीढाना में रहकर जिले के खेल संगठनों और प्रशिक्षकों के प्रयासों से एस्ट्रोटर्फ मे हॉकी खेलकर पारधी समुदाय के जैकी सोलंकी का राष्ट्रीय स्तर पर पहुचना खुशी और गर्व की बात है । उन्होने कहा कि समाज के हर तबके से सकारात्मकता खोजी जा सकती है । विधायक श्री खण्डेलवाल ने कहा कि बैतूल जिले में पढाई ,खेल सहित अन्य क्षेत्रों में प्रतिभाओं की कमी नही है । प्रतिभाओं को आगे बढ़ा कर उचित मंच प्रदान करने के लिये मै तो चिंता करता हूँ । परन्तु प्रतिभाओं को आगे लाना हम सभी की जिम्मेदारी है, इसलिए जनप्रतिनिधियों के साथ समाज की सहभागिता भी जरूरी है।उन्होने कहा कि नेशनल चैम्पियनशिप के लिये चयनित हुये हॉकी खिलाडी जैकी सोलंकी को भविष्य में भी हर स्तर पर सहयोग किया जावेगा जिससे वह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचकर बैतूल के साथ प्रदेश और देश का नाम रोशन कर सके ।

कार्यक्रम में जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे,जिला हॉकी संघ के अध्यक्ष अक्षय वर्मा ,सचिव जगेन्द्र सिंह तोमर ,जिला हॉकी संघ के पूर्व अध्यक्ष प्रदीप खण्डेलवाल ,वरिष्ठ खिलाडी हेमन्त चन्द्र बबलू दुबे, रमेश भाटिया,लल्ली वर्मा,विवेक देशपांडे,राजा रागडे , संतोष अमरोही,युवराज गौर,मेधावी खिलाडी की माता जी श्रीमती राधा सोलंकी ,जिला खेल अधिकारी पूजा कुरील ,हॉकी कोच पिन्टू इवने सहित खिलाडी , कोच और खेलप्रेमी मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ खिलाडी रमेश भाटिया ने और आभार प्रदर्शन जिला खेल अधिकारी पूजा कुरील ने किया ।

किसान बंधु अपनी कृषि उपज मंडी प्रांगण में लाकर ही विक्रय करे

कृषि उपज मंडी समिति राजगढ़ के सचिव ने किसान बंधुओं से किया आग्रह

धार। कृषि उपज मंडी समिति राजगढ़ (धार) द्वारा किसान बंधुओं से अपनी उपज कृषि उपज मंडी प्रांगण में लाकर ही विक्रय करने की अपील की है। उपज मंडी प्रांगण में ही विक्रय करने तथा नकद भुगतान प्राप्त करने की अपील की है। बगैर अनुज्ञप्तिधारी व्यापारी को कृषि उपज विक्रय नही करने तथा भुगतान की धोखाधड़ी से बचने हेतु मंडी प्रशासन द्वारा मंडी क्षेत्र के हाट बाजार एवं विभिन्न पंचायतों में किसान रथ एवं मोटर साइकिल से अनाउंस कराया गया। ग्राम पंचायत में सरपंचों की उपस्थिति में किसानों को जागरूक किया गया।

कृषि उपज मंडी समिति राजगढ़ के सचिव उदयसिंह चौहान, अधीक्षक हरीशंकर जोशी ने किसान बंधुओं से अपनी कृषि उपज मंडी प्रांगण में लाकर ही विक्रय करने की अपील की है। इस अवसर पर ग्राम के कृषकगण, मंडी कर्मचारी सुरभान वास्केल ,अंतर सिंह मुझाल्दा आदि उपस्थित थे। जानकारी सहायक ग्रेड- 3 रूपालाल सागठिया ने दी।

अयोध्या नगरी बनी बैतूल, राम रूप में विराजे श्रीगणेश

बैतूल। बैतूल नगर के नवयुवक नवज्योति गणेश मंडल लोहिया वार्ड द्वारा लगातार 35 वें वर्ष गणेश उत्सव का पर्व उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। इस बार मंडल के कार्यकर्ताओं ने 15 फीट ऊंचे अयोध्या में विराजे भगवान श्रीराम की प्रतिरूप भगवान श्रीगणेश की विशाल प्रतिमा स्थापित की है। इस प्रतिमा को स्थापित करने के पूर्व मंडल द्वारा सारणी के कुशल कलाकार बबलू खान एवं साथियों द्वारा 10 दिन पहले से भगवान श्रीगणेश का विशाल मंदिर तैयार किया गया है। इस मंदिर में अयोध्यावासी राम के रूप में विराजी गणेश प्रतिमा पूरे शहर में आकर्षण का केंद्र बनी है। मंडल समिति के संरक्षण दीपक शर्मा और अध्यक्ष नंदू मामा ने बताया कि गणेश मंडल द्वारा हर वर्ष परिपाटी के अनुसार चित्ताकर्षक प्रतिमा स्थापित की जाती है। इस बार जो प्रतिमा स्थापित की गई है, वह अब तक की सबसे ऊंची प्रतिमा है। उन्होंने बताया कि अयोध्या में विराजे भगवान राम सबके आदर्श है। ऐसे में सभी कार्यकर्ताओं ने मिलकर अयोध्यावासी राम के रूप में श्री गणेश की प्रतिमा स्थापित की है। यह प्रतिमा खंजनपुर के उम्दा मूर्तिकार आशीष प्रजापति ने एक माह में तैयार की है। मंडल के उपाध्यक्ष हर्ष मालवीय ने बताया कि राम रूप में विराजे श्रीगणेश की झांकी तैयार करने के लिए सारणी के कलाकारों ने दस दिन का समय लिया। इसके लिए 80 हजार रुपए खर्च किए गए। उन्होंने बताया कि 40 फीट ऊंचे मंदिर में विशाल घंटा भी लगाया गया है।

रामायण में रणवीर के किरदार पर अपडेट

नितेश तिवारी के डायरेक्शन में बनने वाली रणबीर कपूर की फिल्म रामायण अक्सर चर्चा में आ जाती है। इस फिल्म से जुड़े अपडेट आए दिन सामने आते रहते हैं। अभी तक सामने आई जानकारी में बताया गया कि फिल्म रामायण में रणबीर कपूर भगवान राम का और साई पल्लवी माता सीता का रोल करने वाली हैं। इसके साथ ही फिल्म में दूसरे किरदार निभाने वाले स्टार्स को लेकर जानकारी आती रहती है। अब लेटेस्ट मीडिया रिपोर्ट में फिल्म रामायण को लेकर दिलचस्प अपडेट सामने आए हैं।

इस फिल्म के सेट से रणबीर कपूर और साईं पल्लवी की भगवान राम और माता सीता के गेटअप में तस्वीरें वायरल हो चुकी हैं। इसके बाद से रामायण को बड़े पर्दे पर देखने के लिए दर्शक काफी उत्साहित हैं। अब फिल्म रामायण को लेकर नया अपडेट सामने आया। फिल्म रामायण में रणबीर कपूर डबल रोल करने वाले हैं। फिल्म में वह भगवान राम और परशुराम दोनों का किरदार निभाएंगे।

बताया गया कि फिल्म में परशुराम का रोल छोटा है, लेकिन काफी महत्वपूर्ण है। मेकर्स ने सुनिश्चित किया है इसे काफी अच्छे तरह से दिखाया जाए। रिपोर्ट में आगे बताया गया है रणबीर कपूर की फिल्म रामायण में अमिताभ बच्चन की भी एंट्री हो गई। हालांकि, अमिताभ बच्चन स्क्रीन पर दिखाई नहीं देंगे बल्कि वह जटायु को अपनी आवाज देंगे। इसके साथ ही जटायु के वीएफएक्स को असली दिखाने के लिए मेकर्स ने अमिताभ बच्चन की आंखों का स्कैन भी किया है।

फिल्म रामायण में रणबीर कपूर और साईं पल्लवी के अलावा यश, सनी देओल, रवि दुबे, लारा दत्ता, रकुल प्रीत सिंह, अरुण गोविल, कुणाल कपूर, हरमन बावेजा, सोनिया बलानी को कास्ट किए जाने की जानकारी है। यश को रावण के रोल में, सनी देओल हनुमान के रोल में, रवि दुबे लक्ष्मण के रोल में, लारा दत्ता कैकेयी के रोल में, रकुल प्रीत सिंह शूर्पणखा के रोल में, अरुण गोविल दशरथ के रोल में, कुणाल कपूर इंद्र देव के रोल में, हरमन बावेजा विभीषण के रोल में और सोनिया बलानी उर्मिला रोल में नजर आ सकती हैं।

सलमान की सिकंदर में नई एक्ट्रेस की एंट्री

सलमान खान अपनी आने वाली फिल्म सिकंदर को लेकर सुर्खियों में हैं। इन दिनों वे अपनी इस फिल्म की जोर-शोर से शूटिंग कर रहे हैं। सलमान खान की इस फिल्म में रश्मिका मंदाना ने नजर आएंगी। लेकिन, अब सिकंदर को लेकर एक और बड़ा अपडेट सामने आया है। फिल्म में रश्मिका मंदाना के बाद एक और साउथ की एक्ट्रेस की भाईजान की फिल्म में एंट्री हुई। यह एक्ट्रेस अजय देवगन के साथ ब्लॉकबस्टर फिल्म दे चुकी है। इसका नाम काजल अग्रवाल है।

सिकंदर में सलमान खान और रश्मिका मंदाना के साथ काजल अग्रवाल भी दिखेगी। बताया जा रहा है कि सिंघम एक्ट्रेस ने भाईजान संग फिल्म की शूटिंग भी शुरू कर दी। गौरतलब है कि 18 जून को साजिद नाडियाडवाला की फिल्म सिकंदर की शूटिंग शुरू हो गई है और इसका डायरेक्शन एआर मुरुगाडोस द्वारा किया जा रहा है। एआर मुरुगाडोस आमिर खान की फिल्म गजनी का निर्देशन कर चुके हैं।

फिल्म की शूटिंग मुंबई में शुरू हुई, जहां सलमान खान एक रोमांचक मिड एयर एक्शन सीक्वेंस शूट कर रहे हैं। बीते दिनों सुपरस्टार ने नाडियाडवाला ग्रैंडसन एंटरटेनमेंट के साथ मिलकर सोशल मीडिया पर शूट के पहले दिन की तस्वीर शेयर कर नई जर्नी की शुरुआत की अनाउंसमेंट की। टीम ने यह कन्फर्म किया है कि यह एक्शन पैक्ड फिल्म ईद 2025 के मौके पर थिएटर में रिलीज होगी। सिकंदर अगले साल ईद के मौके पर रिलीज होगी।

'मिर्जापुर' में कालीन भैया बनेंगे रितिक रोशन

मिर्जापुर सबसे चर्चित और लोकप्रिय सीरीज में से एक है। इस पॉपुलर सीरीज के तीसरे सीजन को भले ही दर्शकों से पहले दो सीजन जितना प्यार न मिला हो, लेकिन किरदारों की लोकप्रियता आज भी कायम है। अब सोशल मीडिया पर हो रही चर्चाओं से कयास लगाया जा रहा है कि मिर्जापुर पर जल्द ही फिल्म बन सकती है। इस फिल्म में बॉलीवुड के एक सुपरस्टार कालीन भईया का किरदार निभाते दिखाई देंगे।

ये सुपरस्टार और कोई नहीं बल्कि रितिक रोशन हैं। सोशल

मीडिया पर हो रही चर्चाओं की मानें तो रितिक रोशन मिर्जापुर पर बनने वाली फिल्म में 'कालीन भईया' का किरदार निभाएंगे। इस चर्चा के बाद से पंकज त्रिपाठी के चाहने वालों ने रितिक रोशन से उनकी तुलना करना शुरू कर दिया। कई सोशल मीडिया यूजर्स ने दावा कि रितिक इस रोल के लिए ठीक नहीं हैं, वे इस रोल में सही नहीं बैठेंगे। सोशल मीडिया पर चल रही इन अफवाहों पर डायरेक्टर गुरमीत सिंह ने रिएक्ट किया।

उन्होंने इस पर कोई ऑफिशियल कमेंट न करते हुए कहा कि निर्माता और स्टूडियो के लोग इस पर विचार कर रहे हैं। फिल्म बनेगी या नहीं इस पर वही लोग कुछ कह सकते हैं। पॉपुलर वेब सीरीज 'मिर्जापुर' की बात करें तो इसका पहला सीजन साल 2018 में आया था। इस सीरीज ने ही पंकज त्रिपाठी को इंडस्ट्री में उन्हें उनका हक दिलाया. शुरुआत से ही 'मिर्जापुर' की पॉपुलैरिटी बनी हुई है।

रियल बॉक्स

पौराणिक फिल्मों का अब ये नया दौर

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हिंदी फिल्मों में जब भी धर्म का जिक्र हुआ, दर्शकों ने उसे हाथों हाथ लिया! भगवान की शरण में बॉलीवुड की फिल्मों ने कई बार सफलता का स्वाद भी चखा। ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों के जमाने में आई रामराज्य से लगाकर आज जब भी परदे पर भगवान उतरे, फ़िल्मकार को उनका आशीर्वाद जरूर मिला! फिल्म इंडस्ट्रीज में एक्शन के साथ धर्म और ईश्वर के चमत्कारों को दिखाने वाली फिल्मों का हमेशा वर्चस्व रहा है। फिल्म बजरंगी भाईजान का नायक हनुमान भक्त है। अग्निपथ रितिक रोशन गणेश का गाना भगवान गणेश को समर्पित था। शाहरुख खान ने भी जब 'डॉन' का रीमेक बनाया तो गणेश की स्तुति की! अमिताभ बच्चन की तो करीब सभी हिट फिल्मों में भगवान या अल्लाह का आशीर्वाद साथ चला। कुली, अमर-अकबर- एंथनी, सुहाग, दीवार हो या 'कल्कि' सभी में आस्था का कोई न कोई तड़का जरूर लगा। अक्षय कुमार ने भी जब खिलाड़ियों के खिलाड़ी में जय शेरावालिए तेरा शेर ... गाया तो धूम मच गई। फिर वे ओएमजी सीरीज की दो फिल्मों में भगवान की भूमिका में दिखाई दिए।

भारत में पौराणिक फ़िल्में बनाने का चलन 1920 के दशक में ही शुरू हो गया था। तब दर्शकों को सिनेमाघर तक लाने के लिए धार्मिक कथाओं पर फ़िल्में बनाए जाना शुरू हुआ। फिल्मकारों ने इन विषयों पर बहुत सी फ़िल्में बनाई। उन्हीं में से एक कंपनी की स्थापना भारतीय सिनेमा के महान स्वप्नद्रष्टा होमी वाडिया ने की थी। फिल्मों के शुरूआती दौर में जब बोलने वाली फ़िल्में आई तो संपूर्ण रामायण (1961), महाभारत (1965), जय संतोषी मां (1975), करवा चौथ (1980) और महाबली हनुमान (1981) जैसी फ़िल्में बनी। इन फिल्मों की कहानी धार्मिक आस्था से जुड़ी होने की वजह से दर्शकों ने इसे पसंद भी किया। इन फिल्मों का कथानक पहले से दर्शकों को पता था, इसलिए उनकी कहानियों से ज्यादा इनके फिल्मांकन में रूचि थी। इन फिल्मों के कथानकों के लिए कॉपीराइट की चिंता भी नहीं थी। हालांकि, अब समय बदल चुका है और आज के निर्देशकों के पास नई तकनीक से धार्मिक कथानकों को फिल्माने के बहुत से विकल्प मौजूद हैं। समय बीतने के साथ, हर तरह की पौराणिक कहानियाँ सिनेमा के परदे नए स्वरूप में दिखाई जाने लगी है।

पिछले कुछ सालों में सिनेमा की दुनिया में एक अलग ट्रेंड आया। यह है पौराणिक कहानियों या परंपराओं पर आधारित फिल्मों का। ऐसी फिल्मों में संस्कृति के साथ कुछ पौराणिक कहानियों पर ज़ोर देकर फिल्मकारों ने लोकप्रियता भी बटोरी। इसी साल (2024) में आई फिल्म कल्कि 2898 एडी में पौराणिक कथाओं में शुमार भगवान विष्णु के दसवें को दिखाया गया है। फिल्म के निर्देशक नाग अश्विन ने इस फिल्म को महाभारत का सीक्वल बताया। इस फिल्म में कलयुग को दिखाया गया, जिसका अब अंत होने वाला है। फिल्म में अमिताभ बच्चन अश्वत्थामा के किरदार निभाया हैं, जो मान्यता के हिसाब से महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण से मिले श्राप की वजह से आज भी धरती पर मौजूद हैं। 2023 में रामायण पर आधारित आदि पुरुष फिल्म बनाई गई थी। फिल्म को ओम राउत ने निर्देशित किया और प्रभास श्री राम के किरदार में नजर आए थे। 2022 में रिलीज हुई कांतारा में स्थानीय मान्यता के अनुसार, देवता पंजुरली और गुलिगा देवता को कहानी का एक अहम हिस्सा दिखाया गया।

आने वाली कई फिल्मों की कहानी आज की पृष्ठभूमि की होते हुए पौराणिक कथाओं से प्रेरित हैं। बाहुबली, आरआरआर, ब्रह्मास्त्र, कार्तिकेय-2 जैसी फिल्में इसका उदाहरण हैं। भगवान श्रीराम की जीवनी पर आधारित

फिल्म रामायण का निर्माण भी चल रहा है। इसके निर्देशन की बागडोर नितेश तिवारी के हाथ में है। प्रमुख किरदारों में राम के रोल में रणबीर कपूर को लिया गया और सीता बनी है साई पल्लवी। इसके अलावा सीता- द इंकार्नेशन का निर्देशन अलौकिक देसाई कर रहे हैं। फिल्म में सीता का किरदार एक्ट्रेस कंगना रनौत कर रही हैं। विक्की कौशल भी द इम्मॉर्टल अश्वत्थामा में काम करने वाले हैं। इस माइथोलॉजिकल फिल्म की तैयारी निर्देशक आदित्य धर ने शुरू कर ली। फिल्म का रिसर्च मटेरियल तैयार हो चुका था। चाणक्य जैसे अद्भुत चरित्र पर टीवी सीरियल के साथ कई किताबें मौजूद हैं। लेकिन, अभी तक कोई फीचर फिल्म का निर्माण नहीं हुआ। ऐसे में नीरज पांडे की ये फिल्म दर्शकों में उत्सुकता तो जगाती है। इसमें चाणक्य का किरदार अजय देवगन निभाएंगे।

ब्रह्मास्त्र से लगाकर कंतारा तक कई ऐसी फ़िल्में हैं, जो पौराणिक कथाओं से प्रेरित हैं। अक्षय कुमार की रामसेतु में रामायण काल में बने सेतु की कुछ कहानियों को दिखाया गया। ऐश्वर्या राय और अभिषेक बच्चन की 2010 में आई रावन में एक डाकू पुलिस वाले पत्नी का किडनैप करता है और फिर वो उससे प्यार करने लगता है। इस फिल्म में रामायण से कुछ किस्से लिए गए हैं। महाभारत के कुछ अंश प्रकाश झा की फिल्म राजनीति में भी दिखाए गए। इसमें रणबीर कपूर, कैटरीना कैफ, अजय देवगन और अर्जुन रामपाल हैं। फिल्म हनुमान 2024 की बड़ी फिल्मों में है जिसने कम बजट में अपार सफलता हासिल की। इस फिल्म में हनुमान की शक्तियां एक लड़के में आ जाती हैं और फिर वो सुपरहीरो बन जाता है। कमल हासन की फिल्म दशावतारम को बेहतरीन फिल्मों में माना जाता है। इसमें अलग-अलग पौराणिक कहानियों से किस्से लिए गए हैं।

फिल्म इंडस्ट्री में सबसे ज्यादा कमाई का रिकॉर्ड भी एक धार्मिक फिल्म जय संतोषी माँ के नाम है। 1975 में आई इस फिल्म ने अपनी लागत का कई गुना बिजनेस करके शोले जैसी फिल्म को टक्कर दी थी! जब शोले रिलीज हुई, उन्हीं दिनों जय संतोषी माँ फिल्म भी प्रदर्शित हुई। लेकिन, दोनों ही फिल्मों के कथानक में विरोधाभास था। शोले में हिंसा की भरमार थी, जबकि जय संतोषी माँ के जरिए आस्था और विश्वास का संदेश दिया गया था। दोनों फिल्मों का सबसे मजेदार तथ्य यह था कि जय संतोषी माँ का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन शोले के मुकाबले अधिक था! शोले में गब्बर सिंह की गोलियां खून बिखेर रही थी, जबकि जय संतोषी माँ में दर्शक सिनेमाघर में आरती गा रहे थे। आज 49 साल बाद भी जय संतोषी मां का जिक्र सफल फिल्मों में लिया जाता है।

जय संतोषी माँ ने अपने समय काल में जबरदस्त कामयाबी हासिल की थी! दर्शकों ने इसे सिर्फ फिल्म की तरह नहीं लिया, बल्कि सिनेमाघर को मंदिर की तरह पूजने भी लगे। दर्शक हॉल में चप्पल-जूते पहनकर नहीं आते थे! श्रद्धा इतनी उमड़ पड़ी कि आरती के वक़्त लोग सीट से खड़े होकर तालियां बजाते और सिक्के चढ़ाते थे! गांवों और शहरों में हर जगह श्रद्धा का सैलाब उमड़ पड़ा था। हर शुक्रवार महिलाएं संतोषी माता का व्रत करने लगी! मंदिरों में संतोषी माता की मूर्ति स्थापित की जाने लगी थी। संतोषी माता की व्रत कथा सुनी और सुनाई जाने लगी! गुड़-चने का प्रसाद बंटने लगा। लड़कियों से लेकर बूढ़ी महिलाएं तक शुक्रवार व्रत रखकर उद्यापन करने लगी थी! इस फिल्म के बाद भी संतोषी माता को लेकर आस्था का ज्वार कम नहीं हुआ! फिल्म के बाद इसी विषय पर आए सीरियल को भी दर्शकों ने बेहद पसंद किया था। दरअसल, ये ऐसा स्वीकार्य विषय है, जो कभी दर्शकों के जहन से नहीं निकलता। बदले हालात में फर्क सिर्फ ये आया कि नए दौर की कहानियों में धर्म का तड़का लगने लगा।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

बर्थडे पर अक्षय बिल्ली की तरह दूध पीते दिखे

अक्षय कुमार 9 सितंबर के दिन 57 साल के हो गए। अक्षय कुमार ने दो दिन पहले ही ऐलान किया था कि वे अपने बर्थडे पर कुछ बड़ा अनाउंस करने वाले हैं। अब एक्टर ने स इंतजार को पूरी तरह खत्म कर दिया है। लोगों ने अंदाजा लगा लिया था कि अक्षय कुमार अपनी कोई नई फिल्म का ऐलान करने वाले हैं और ऐसा ही हुआ। अभिनेता ने अपने बर्थडे के मौके पर नई फिल्म का ऐलान कर दिया, जिसमें हॉरर और कॉमेडी का तड़का लगने वाले हैं। अक्षय कुमार ने 14 साल बाद निर्देशन प्रियदर्शन से हाथ मिलाया और अब वे उनके निर्देशन में बन रही फिल्म भूत बंगला में नजर आएंगे, जिसका टीजर भी आ गया है।

अक्षय कुमार ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम अकाउंट पर फिल्म भूत बंगला का टीजर जारी किया,

जो काफी मजेदार है। इस हॉरर कॉमेडी फिल्म के टीजर में अक्षय कुमार बिल्लियों की तरह दूध पीते दिख रहे हैं, जो टीजर का सबसे ज्यादा फनी पार्ट है। इस टीजर में देखा जा सकता है कि शुरुआत में अमावस्या का चांद दिखाया जाता है और फिर एक काली बिल्ली होती है, जो अपनी पूंछ को हवा में लहरा रही है। इसके साथ सीधे अक्षय कुमार को दिखाया जाता है, जो हाथ में कटोरी पकड़ी बिल्लियों की तरह दूध पी रहे हैं और अक्षय के कंधे पर वही काली बिल्ली बैठी है।

अक्षय के बैकग्राउंड में एक भूत बंगला है। इस टीजर के साथ अक्षय कुमार ने लिखा, मेरे जन्मदिन पर आपके प्यार के लिए शुक्रिया। इस साल का जश्न भूत बंगला के फर्स्ट लुक के साथ। मैं 14 साल बाद प्रियदर्शन के साथ फिर से जुड़ने के लिए काफी ज्यादा एक्साइटेड हूं। इस सहयोग को काफी समय हो गया है। इस अविश्वसनीय यात्रा को आप सभी के साथ साझा करने के लिए इंतजार नहीं कर सकता। जादू के लिए बने रहें।

शांताराम ने नवरंग में सौंदर्यता के रंग ऐसे भरे

अशोक जोशी

वी शांताराम ने नवरंग फिल्म की कथा एक चित्रकार की प्रेरणा से बुनी थी। जिस रघुवीर मूलगांवकर के चित्रों की कल्पना उनकी पत्नी थी, उसी तरह फिल्म का कथानक लिखा गया।

चित्रकार को राज कवि बनाकर उससे वैसी ही कल्पनाएं करवाई जैसे एक चित्रकार करता है। कविराज अपनी पत्नी के बारे में कल्पना करते हुए अपनी कविता की मोहनी में रंग भरता है।

प्रख्यात चित्रकार रघुवीर मूलगांवकर मुंबई के गिरगांव क्षेत्र में स्थित भाटवडेकर बिल्डिंग में रहने के लिए आए। वहीं उन्होंने अपना एक स्टूडियो बनाया जिसका नाम मूलगांवकर आर्ट स्टूडियो था। उस जमाने में पत्र पत्रिकाओं के मुख पृष्ठ के साथ साथ कैलेंडर आदि में देवी देवताओं के चित्रों का प्रचलन बहुत होता था। इसके चलते मूलगांवकर आर्ट स्टूडियो का काम भी इतना बड़ा कि उसे पूरा करने के लिए मूलगांवकर को पूरे दिन के साथ साथ रात को देर तक स्टूडियो में रहकर काम करना पडता था।

अपनी चित्रकला के साथ साथ भगवान मंगेश के आशीर्वाद से उन्होने अपना काम शून्य से आरम्भ कर इतनी ऊंचाई तक पहुंचा दिया था कि उनके यहां लक्ष्मी सदैव विराजमान रहती और स्टूडियो में रुपयों की बरसात होने लगी थी। देखते ही देखते उन्होंने दो गाड़ियां खरीद ली और घर का कामकाज करने के लिए नौकरों की फौज जमा कर ली। इसी कमाई से उन्होंने वालकेश्वर में समुद्र के सामने स्थित कमल बिल्डिंग की सातवीं मंजिल पर एक अपार्टमेंट भी खरीद लिया और बान्द्रा जैसे पॉश इलाके में एक बंगला भी बनवा लिया।

इसके बाद वह बालकेश्वर स्थित हवादार अपार्टमेंट में रहने के लिए चले गए। वहां से वह रोजाना सुबह गिरगांव स्थित स्टूडियो जाते और शाम को 6 बजे तक घर चले आते। लेकिन उन्हें देखकर उनकी पत्नी को लगा जैसे कि वह यहां आने के बाद बदल से गए हैं। उन्हें बात बात पर गुस्सा आने लगा और वह उदास से रहने लगे थे। एक दिन अचानक उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि हम फिर से गिरगांव लौट चलते हैं। लेकिन, वह इसलिए तैयार नहीं हुई कि जो गृहस्थी उन्होने यहां बसा रखी थी उसे वापस गिरगाव ले जाना संभव नहीं था।

आखिर में उन्होने अपने मन की बात अपनी पत्नी को सच सच बताते हुए कहा कि तुम यहां रहती हो और जब मैं अकेला वहां स्टूडियो में काम करने बैठता हूं तो मुझे कुछ सूझता नहीं। ऐसा लगता है जैसे मेरी कल्पना कुंठित हो गयी है। ऐसा लगता है सारा उत्साह कहीं समाप्त हो गया है। तेरे पास रहने के अहसास और तेरी चूड़ियों की खनक सुनते सुनते मुझे जो आभास होता था, लगता है वह कहीं गुम हो गया है। जब तक मुझे तेरे केशो से आती मोगरे की कलियों की वेणी की खुशबू आती, मेरा ब्रश चलता रहता था। लेकिन लगता है वह अब थम सा गया है। यह सब सुनकर उनकी पत्नी को लगा जैसे उनका अलग अलग रहना उनके काम पर असर डाल रहा है। यह सब सोचकर उन्होंने दोबारा गिरगांव लौटने के लिए हामी भर दी और पूरा परिवार गिरगांव लौट आया। वहां लौटने के बाद एक बार फिर मूलगांवकर के ब्रश से सौंदर्य का झरना बहने लगा।

उसी दौरान एक बार निर्माता निर्देशक वी.शांताराम किसी काम से मूलगांवकर स्टूडियो आए। वहां उन्होंने स्त्रियों के एक से बढ़कर एक सुंदर चित्र देखकर पूछा मूलगांवकर तुम अपनी चित्रकारी के लिए कोई मॉडल भी नहीं लेते फिर भी इतने सुन्दर चेहरे यह कमनीय रूप किसे देखकर उकेरते हो? तब उन्होंने कहा कि मैं अपनी पत्नी को देखकर ही यह सारे चित्र बनाता हूं!

सुनकर शांताराम चले गए और बात आयी गयी हो गई । इस घटना के कुछ महीनों के बाद मूलगांवकर को एक फिल्म के प्रीमियर शो के चार टिकट मिले।

यह टिकट शांताराम जी ने पहुंचाए थे। पूरा परिवार फिल्म देखने पहुंचा। उसी समय शांताराम ने पहली बार मूलगांवकर की पत्नी को देखा। वह दिखने में अच्छी थीं। गोरा रंग, नौ वारी साडी बालों में वेणी में वह सुंदर लग रही थी। लेकिन, शांताराम ने महसूस किया कि फिर भी उनमें वह बात नहीं थी, जो मूलगांवकर के चित्रों की स्त्रियों में होती थी। उनकी सीता हो या शंकुतला सभी अगाध सौंदर्य का प्रतिमान होती थी। शांताराम ने उनसे पूछा हालांकि आपकी पत्नी सुंदर है। फिर भी वह आपके ब्रश से निकली महिलाओं जितनी सुंदर तो नहीं है। फिर आपके चित्र इतने सुंदर क्यां ?

तब मूलगांवकर ने जो कहा वह शांताराम की फिल्म के लिए प्रेरणा स्रोत बन गया। उन्होने कहा आपने थिएटर में जिसे देखा वह मेरी मूर्त पत्नी है और आप जो मेरे चित्रों में देखते हैं वह मेरी अमूर्त मेरी कल्पना के रंगों में सजी संवरी मेरी पत्नी है। जिसके बारे में मैं उनकी चूड़ियों की खनक और गजरे की महक को सूंघते हुए कल्पना करता हूं और वहीं कल्पना मेरे चित्रों में दिखाई देती है।

यह सब सुनकर शांताराम ने नवरंग फिल्म की कथा बुन डाली। उन्होंने मूलगांवकर के चित्रकार को राज कवि बनाकर उससे वैसे ही कल्पनाएं करवाई जैसे एक चित्रकार करता है। कविराज अपनी पत्नी के बारे में कल्पना करते हुए अपनी कविता की मोहनी में रंग भरता है। यह मोहनी और कोई नहीं उसकी पत्नी जमुना का ही काल्पनिक रूप है। जिसे वह एक मानता है जबकि उसकी पत्नी उसे अपने पति की प्रेयसी समझती रहती है। इसी कल्पना के सहारे वह लोकप्रियता के शिखर पहुंच जाता है। लेकिन उसकी पत्नी उसकी कल्पना को अपनी सौत मानकर उसके साथ ईर्ष्या करती रहती है और घर छोड़कर मायके चली जाती है।

पत्नी से दूर रहकर राज कवि की लेखनी ठीक वैसी ही कुंठित हो जाती है जैसे कि अपनी पत्नी से दूर रहकर मूळगावकर का ब्रश खामोश हो गया था। जब राजकवि से राजदरबार में कविता प्रस्तुत करने की फरमाइश की जाती है तो खाली हाथ और अवरूद्ध मस्तिष्क के साथ वह पागलों की तरह अपना सिर थामकर बैठ जाता है। उसकी आंखों से अश्रुधारा बह निकलती है और पूरा दरबार स्तब्ध रह जाता है। तभी उसे अपनी पत्नी की पायल के घुंघरू की आवाज सुनाई देती है। उसकी आवाज सुनते ही कविराज की स्फूर्ति लौट आती है। वह दरबार में एक कविता पेश करता है तू छुपी है कहां मैं तड़पता यहां। कविता के अंत में वह मूर्छित होकर गिर पड़ता है और उसके मुंह से यह स्वीकारोक्ति होती है, यमुना तू ही है मेरी मोहिनी। वाकई में रघुवीर मूलगांवकर की कल्पना और शांताराम की उसकी फिल्मी प्रस्तुति ने हिन्दी फिल्म इतिहास में नवरंग जैसी अनमोल रचना पेश की है जो मूलगांवकर के चित्रों की तरह ही पावन और सुंदर है।

‘उनके गणेश, गणेश... और हमारे’

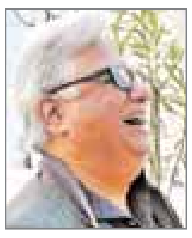

प्रकाश पुरोहित

तीस-चालीस मकानों की टाउनशिप में पिछले साल शिव मंदिर बना, ठेकेदार शर्मा के (काले) धन से। उसी समय गणेशजी भी बैठाए गए और दस दिन तक हर आरती में शर्मा-परिवार हाजिर रहा और अपने हाथ से प्रसाद वितरण किया। तरह-तरह के खेल भी हुए और इनाम भी बंटे। वाट्सएप और फेसबुक हांफने लगे मैसेज और पिक्चर से ! कई दिनों तक शर्मा परिवार इसका बखान करता रहा और ना जाने कितनों दिलों पर शिवजी के नागराज लोटते रहे। चूंकि समय नहीं था तो मन-मसोस कर रह गए कई गणेश-भक्त !

इस बार पूरी तैयारी थी। कह सकते हैं साल भर योजना बनती रही कि दक्षिण हिस्से के अगर शिव मंदिर में गणेश बैठाए जा सकते हैं तो हम उत्तर पट्टी वाले भी कोई हलके-पतले थोड़े ही हैं। हम उधर क्यों जाएं, हम अपने गणेश बैठाएंगे और इसी संकल्प का नतीजा रहा कि देखते ही देखते उत्तर दिशा में गणेश मंदिर बना दिया गया। इसके पीछे चाल यह थी कि जब गणेश मंदिर है तो फिर शिव मंदिर में तो शर्मा गणेश बैठाने से बाज आ जाएंगे। इधर के नेता बने वर्मा, जो गांठ के पूरे थे और जिनकी शर्मा से एक ठेके को लेकर कहा-सुनी हो चुकी थी। हिसाब तो करना ही था। देखते ही देखते गणेश मंदिर खड़ा कर दिया और यह ऐलान भी कि इस बार तो गणेशजी अपने घर यानी गणेश मंदिर में ही बैठेंगे।

अब सोचे से ही कुछ हो जाता, तो लोग खेत में जाकर काम क्यों करते ! बहस शुरू हो गई कि गणेश जब शिव मंदिर यानी पिता के घर में बैठाए जा रहे थे तो फिर उन्हें परिवार से अलग क्यों किया जा रहा है। शिव से ही तो गणेश हैं। इस पर वर्मा का जवाब था कि इतने ही पिता-पिता कर रहे हो तो फिर अपने बेटे-बहू को क्यों साथ नहीं रखते, उन्हें तो किराए के फ्लैट में रहना पड़ रहा है? अगर शिव

मंदिर में ही गणेश बैठाना ठीक है तो फिर पूरे शहर में इतने गणेश मंदिर क्यों हैं? गणेशजी की अपनी फॉलोइंग है और उनके भक्त किसी से मांग थोड़े ही रहे हैं। खुद जेब से धन लगा रहे हैं तो किसी का पेट क्यों दुःख रहा है।

इस मसले पर पूरी टाउनशिप दो हिस्सों में बंट गई। जिसके स्वार्थ, जहां सध रहे थे, उधर चले गए। गणेश मंदिर में भी गणेशजी विराजमान हो गए। एक गली के दोनों तरफ दो गणेशजी बैठे थे और दोनों तरफ भक्त हाथ जोड़े खड़े थे। जासूस पक्की खबर दे रहे थे कि उस तरफ आज कितनी भीड़ थी, कौन-सी मिठाई, प्रसाद बंटने वाली है और यह भी कि वर्मा ने तो तंबोला भी शुरू कर दिया है और फुग्गे-खिलौने वालों को लाकर खड़ा कर दिया है कि बच्चे आएंगे तो मां-बाप किधर जाएंगे। आपसी रंजिश भी रंग दिखाने लगी कि 24 की 23 नंबर से खटपट चल रही है, पार्किंग को लेकर, तो दोनों एक जगह तो जा नहीं सकते। ये उत्तर जा रहे तो अपन दक्षिण चले। घरों में भी बड़ा भाई शिव मंदिर में तो छोटा अपने बच्चों सहित गणेश मंदिर की तरफ हो लिया। बिलकुल भाजपा-कांग्रेस वाला फार्मूला !

जिस तरह ‘सत्यम्-शिवम्-सुंदरम्’ की जीनत अमान और इटेलियन फिल्मों की जीना लोलोब्रिगिडा ने शो को सिर्फ इसलिए भंड कर दिया था कि ‘पहले वो आए तब मैं आऊंगी।’ यहां भी उसकी आरती से पहले अपनी आरती नहीं ! आरती के लिए तरह-तरह के बहाने बनाए जाने लगे ‘चीफ गेस्ट आ रहे हैं’, इस तरह के दावे देर तक होते रहते और आता-जाता कोई नहीं, क्योंकि आरती तो वर्मा और शर्मा ही करते थे, यह अलग बात है कि उनके पंडित अलग थे।

इसका फायदा उन मध्यमार्गी भक्तों को मिलता था कि इधर भी हाथ साफ करते थे और उधर से भी प्रसाद पा लेते थे। वर्मा ने भीड़ बढ़ाने के लिहाज से नई जमीन तोड़ी कि अपने साथ किसी एक बुजुर्ग को आरती में शामिल कर लिया। इस तरकीब से पूरा परिवार उनके खेमे में समा गया। मुश्किल यही कि इतने बूढ़े भी कहां मिलते हैं रोज ! उधर शर्मा ने रोज एक बच्चे को गणेश बना कर पेश किया तो यह नया आइटम खूब जमने लगा और परिवार तो क्या बूढ़े भी इधर चले आए !

हर रोज ऑडिट होता, सीसीटीवी कैमरे खंगाले जाते कि कौन, किधर गया और कौन, उधर से इधर आया। शुरू के दो दिन तो शर्मा का पलड़ा भारी रहा कि इधर सवा सौ भक्त आए और उधर सिर्फ तीस ही गए, लेकिन जैसे ही बूढ़ों को आगे खड़ा किया तो वर्मा के वोट-बैंक में जबर्दस्त तेजी देखी गई। बच्चे वाले फार्मूले ने हिसाब बराबर कर दिया। बच्चों को भी जासूसी का प्रारंभिक पाठ पढ़ाया जाने लगा कि ‘जरा देख कर तो आ... आज का प्रसाद-मेन्यू क्या है?’ इस सवाल के एवज में बच्चों को होमवर्क से भी छुट्टी दी गई ! अब बात यूं होने लगी कि शिवजी में कितने और गणेश में कितने। यानी पिता-पुत्र को ही पार्टी बना दिया। फिर तो बातें होने लगीं कि शिवजी वाले आज मिठाई के साथ कचोरी भी दे रहे हैं या गणेशजी के यहां आज जूस का इंतजाम है, ठेलेवाला ही खड़ा कर दिया है। ट्रेवल एजेंट ने शर्मा को सुझाया कि विदेशों में तो मंदिर प्रसाद में पास्ता और बर्गर भी देते हैं, हम ‘मैगी’ तो दे ही सकते हैं और उस रात वर्मा को आरती अल्पमत में करनी पड़ी और रस-मलाई का प्रसाद अगली सुबह सफाईकर्मियों को देना पड़ा। इस घाटे को अगले रोज वर्मा ने बफे खिला कर पूरा किया।

अभी तो पिता-पुत्र का यह ओलिंपिक चल ही रहा है, अनंत चौदस पर बताएंगे, शर्मा के गणेश विजयी रहे या वर्मा के, क्योंकि टाउनशिप में अब ये ही नाम चल रहे हैं, जैसे कभी बिड़ला मंदिर होते थे ना, वैसे ही !

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

कोई बात बिगड़ जाये तो सोचे आदमी मार्स से आया है औरतें वीनस से

स्त्रियों को थोड़ा त्याग की भूमिका करनी होगी स्वार्थी बनना होगा पुरुष को ध्यान रखना होगा कि स्त्री स्वेच्छा से काम कर रही है तो शुक्रगुज़ार हो, ना कर पाये तो उसे झिड़किये मत! आप हर काम में बराबरी के भागीदार हो। पुरुष को असफल होना पसंद नहीं इसलिए स्त्री उसे इशारे में समझा दे उसे उसकी असफलता से कोई समस्या नहीं वो उसे हर रूप में पसंद करती है। महिलायें पुरुषों को अक्सर अहसास दिलाती है कि उन्हें ज़रूरत से ज़्यादा मिल गया है और इसके लिये वो पुरुषों की थैंकफुल हो जाती है अपनी प्राथमिकतायें छोड़ देती हैं और पुरुष इस खुशफहमी में जीता है अगर वो ना होता तो पत्नी कैसे जीती। बिल्कुल ग़लतफ़हमी दूर कर ले पति के मरने के बाद स्त्री ज़्यादातर अकेले परिवार, बच्चे, सास-ससुर को संभालती है और पति, पत्नी के मरते ही, समाज पति से कहता है अब तुम दूसरी शादी कर लो सब अकेले कैसे संभालोगे वो राहत की सांस लेता है।

पुरुष महिलाओं के शब्दों पर ध्यान देते हैं, भावनाओं पर नहीं मसलन जब स्त्री अपनी मोनोटोनस जिंदगी से ऊब कर कहती है बस अब मैं थक गई हूँ तो पुरुष तुरंत कहता है तो नौकरी छोड़ दो (जबकि वो खुद जानता है कि एक की तनख्वाह से घर नहीं चलता)। आप समझिये वो एकरसता भंग करना चाहती है। एक ब्रेक लेकर आप उसे दो-तीन बाहर ले जायें। पुरुष जब थक जाता है तो वो मौन हो जाता है। दरअसल, वो अपनी तकलीफ पत्नी को बताकर उसे परेशान नहीं करना चाहता तो स्त्री समझती है वो उससे कुछ छुपा रहा है, उसे अपना नहीं समझता। सावधान स्त्रियों, कुछ महिलाये बुरी तरह से पुरुष के पीछे पड़ जाती है क्या बात है बताओं। थोड़ा समय उन्हें अकेला छोड़ दें। वो खुद आपके पास आयेंगे।

ऐसे ही जब महिलायें बोलती है तो उसे सिर्फ सुनिये वो सलाह नहीं मांग रही मन हल्का कर रही है। जब वो कहता है ‘‘कुछ नहीं‘‘ मतलब प्लीज़ थोड़ी देर मुझे अकेला छोड़ दो जब वो अकेला गुफा में चले जाये तो परेशानी ना दिखायें बिल्कुल नॉर्मल होकर अपना ध्यान कहीं और बंटा ले। पति के बाहर जाने पर उसकी, फ्लाइट, ऑफिस डिटेल, उठ पायेगा कि नहीं वगैरह-वगैरह बहुत ना पूछे। जाते समय लड़ाई हो जायेगी। आखिर आपसे शादी से पहले भी तो वो मैनेज करता था ना स्त्रियाँ ये ख्याल दिल से निकाल दे कि मेरे बगैर वो क्या करेगा। जॉन ग्रेग कहते हैं पुरुष रबर बैंड की तरह होते हैं कभी-कभी वह खिंच कर दूर चले जाते हैं फिर अपने आप लौट आते हैं नई ऊर्जा के साथ। दोनों की भावानात्मक आवश्यकतायें अलग होती है **जैसे महिलायें चाहती है-**

1. उनका ख्याल रखा जाये
2. उन्हें समझा जाये
3. उन्हें सम्मान दिया जाये
4. वे निष्ठा चाहती हैं
5. वे अपनी बात का समर्थन चाहती है
6. वे बार-बार आश्वस्ती चाहती हैं

जबकि पुरुष चाहते हैं-

1. उन पर विश्वास किया जाये
2. उन्हें स्वीकार किया जाये
3. उन्हें सराहा जाये
4. वे तारीफ चाहते हैं
5. वे चाहते हैं उनसे संतुष्ट हुआ जाये
6. वे प्रोत्साहन चाहते हैं

अब यह पूरी लड़ाई के आसार हैं। स्त्री के ख़्याल रखने का मतलब ही प्यार है पुरुष ख़्याल नहीं रखता उनके हिसाब से प्यार नहीं करता। वे चाहती हैं पुरुष उन्हें केवल प्यार ना करें उन्हें समझे भी। महिलाओं को लगता है पुरुष प्यार तो करता है पर सम्मान नहीं देता। ऐसा करके देखिए वो अभिभूत हो जायेगी। पत्नी हमेशा पुरुष के जीवन में पहले स्थान पर रहना पसंद करती है। पुरुष जो सबके लिये करता है वो उसके लिये भी करता है। वो बुरा मान जाती है। उसे पुरुष के जीवन में खास होना पसंद है। हर बार उसे बहस पसंद नहीं। कभी तो उसे समर्थन मिले ऐसा स्त्री को लगता है।

अगर पुरुष यह सब चीजें कर रहा है तो उसे बार-बार दुहराना होगा। पुरुष बार-बार पूछने से सोचते हैं पत्नी को उस पर विश्वास नहीं है फिर वर्मा जी से पूछेंगी कि ये काम कैसे होगा। पति और चिढ़ जाता है। पुरुष को सराहना पसंद है और स्त्री के चेहरे पर संतुष्टि का भाव। ये करना स्त्री के लिये ज़्यादा कठिन नहीं है। वह ज़्यादा यह ढूंढती है कि उसने (पुरुष ने) उसके लिये क्या नहीं किया इसलिए कई पुरुष स्त्री के लिये सब कुछ करना छोड़ देते हैं। वह हमेशा छोटे बच्चे की तरह उससे व्यवहार करती है। पुरुष की दिक्कत है वो लंबी बातचीत के बीच भटक जाता है और बिना कोई जवाब दिये बाहर निकल जाता है उसके हिसाब से उसका समाधान वो नहीं सुनेगी।

सबसे मुख्य चीज़ है बहस पुरुष अक्सर बहस से बचकर गुफा में चले जाते हैं स्त्रियाँ मेहमानों के सामने सबसे सुखी औरत का मुखौटा लगा लेती है कई बार शांति के लिये स्त्री झंडा फहरा देती है पर दीर्घकाल तक दुःखी रहती। पुरुष की शिकायत है वो सोचती है मैं बिना कुछ कहे उसकी भावनाओं को पढ़ लूं या मेरे काम की महत्ता नहीं समझती (जबकि बाहर जाना ही थकाऊ काम है इसलिए वो घर में बहस नहीं सुकून ढूंढता है) वो हर बात पर बुरा मान जाती है पर किस बात पर मुझे नहीं पता। वो हमेशा बताती है कि वो मेरे लिये कितना करती है, उसे मेरे दोस्त पसंद नहीं पर चाहती है कि मैं उसकी सहेलियों के पतियों को दोस्त बनाऊँ जो मुझे पसंद नही। इधर पत्नी को शिकायत है उसे घर के पैसे भी ऐसे दिये जाते हैं जैसे मैं अकेले खाना खाती हूँ उसे मेरे हेल्पर्स से समस्या रहती है खुद घर गंदा करता है और घर की सफाई में मीन मेख निकालता है मुझे देखते ही

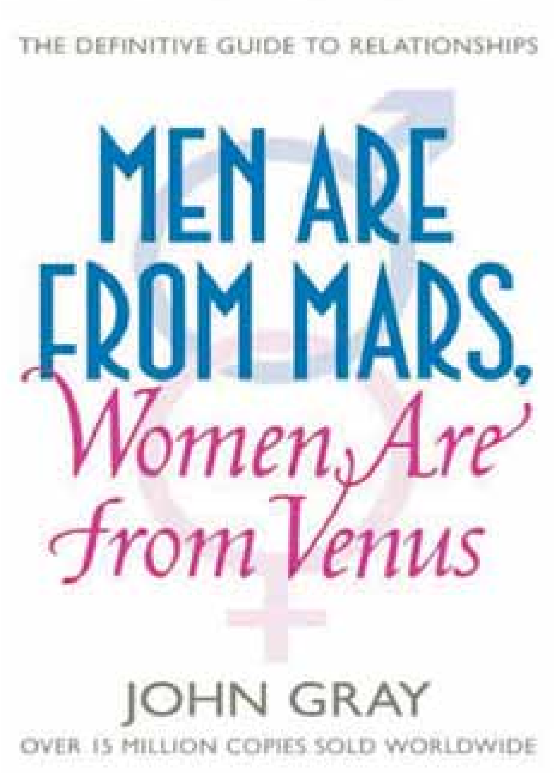

मोबाइल बंद करके उल्टा रख देता है।

अब चलो देखें समस्या के हल क्या है जो मैंने सफेद झंडा फहराने के लिये सीखे कुछ मेहरबान रिश्तेदारों दोस्तों अपने अनुभव से कुछ जॉन ग्रेग से। महिलाये, पुरुषों से बड़े ईनाम नहीं चाहती (वैसे हीरा सबको पसंद है) उसे गुलदस्ता, इत्र, किताब, जन्मदिन पर भूल कर भी गृहस्थी की चीज़ ना दे। जाते समय हग करके उसे बिना कहे बाहर घुमाने ले जायें। उसकी दक्षता की तारीफ करें। कभी-कभी उसके लिये चाय नाश्ता बनायें। अपनी मां के ही खाने की तारीफ उसके सामने ना करें जब वो अच्छे मूड में हो तो कहें क्यों ना तुम माँ से फलानी रेसिपी पूछ लो मैं चाहता हूँ तुम मुझे बनाकर खिलाओं। घर में आते ही उसे आवाज दो। उसके बचपन, फैमिली मेंबर्स की बात करो क्योंकि दिन भर वह आपकी माँ, बहन, भाई से आपकी ज़िंदगी के बारे में सुन सुन के पक गई है। जब भी तैयार हो उसे तवज्जो दे उसमें सुधार भी करा सकते हैं वो खुश होगी आपने ध्यान दिया। बिना सेक्स के भी प्यार कर सकते हैं उसकी, पसंद, नापसंद, विशेष तारीखों को नोट कर ले डिश अच्छी लगने पर उसकी रेसिपी पूछे। बच्चों को गोद में उठा लिया करें। अंतरंग क्षणों में फोन स्विच ऑफ कर दे। शॉपिंग में बोर चेहरा ना बनायें।

अब देखें आप पुरुष के लिए क्या कर सकती है जो वो आपसे दूर ना भागे। ‘‘मैंने तो पहले ही कहा था‘‘ ऐसा उसके गलती करने पर कहना छोड़ दे उसके चीज़े, अच्छे दिन भूल जाने पर बार-बार उसे कोसे मत। और यह अहसास ना दिलाये तुम गैर जिम्मेदार हो। उसे घर का मुखिया पद बहुत पसंद है और वो डिजर्व करता है अहसास दिलाये। जब वो गाड़ी चला रहा हो तो उसे टोकें मत, जब उसकी कोई बात पसंद ना आये तो थोड़ा वक्त गुज़र जाने दे फिर उसे पर बात करें पुरुष दिन भर गल्ती करके एक सॉरी बोल दे महिला माफ कर देती है पर महिला एक गलती करके 100 बार सॉरी बोले पर वो माफ नहीं करता सॉरी ये उसका बेसिक स्वभाव है जिसे हम बदल नहीं सकते। पुरुष या महिला अपनी बात नहीं कह पाते तो फोन या व्हाट्सअप की जगह प्रेम पत्र लिखें जिसमें ये दर्शायें जो वो समझ रहे हैं उसका वो मतलब नहीं था वो उस समय परेशान थी/.था। महिलायें बिना मांगे ही मदद चाहती है और पुरुष इंतज़ार करता है वो मदद मांगे तब दे। महिलायें तारीफ नहीं करती उनका मानना है कि ये उसका फर्ज़ है ऐसा ना करें छोटे से थैंक्यू से काम चल सकता है।

कई बार महिलाओं के मदद ना लेने पर पुरुष को ठेस लगती है कि ये मुझे इस काबिल नहीं समझती सो छोटी-छोटी मदद मांगते रहे उसका अहं संतुष्ट होगा। कई बार दोनों पार्टनर में से एक रोमांस चाहता है दूसरे की इच्छा नहीं है तो लड़ाई ना करें माहौल या मूड बनाये मसलन, फूल, इत्र, नाइट गाउन, अच्छा संगीत। कई बार ऐसा होता है जब हमें लगता है हम इस इंसान को नहीं जानते/जानती ऐसा एकरसता से होता है तो उसे ही पहला दिन मान नई शुरुआत करें। फिर भी कभी कोई बात बिगड़ जाये तो मन में सोचे आदमी मार्स (मंगल) से औरते वीनस (शुक्र) से आई है एडजस्ट करना पड़ेगा तो जनाब ज़िंदगी ये भी कहती है कभी-कभी अपने विचार ज़रूर बताये।

महेश्वर- उफनती नर्मदा... ठहरी नाव

वर्षा ऋतु में बांध का पानी छोड़े जाने से नदियों में जल का स्तर बढ़ रहा है, किसी की जान को खतरा न हो इसलिए ओंकारेश्वर एवं महेश्वर जैसे धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों पर नदियों में नौका विहार बंद है।

फोटो: ऋतुराज बुड़ावनवाला

‘लड़कियां भी तो लड़कियां हैं... !’

❑ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

‘लड़के... तो लड़के ही हैं...’ यह आमतौर पर लड़कों के बचाव में कहा जाता है। आखिर ऐसे बचाव की शुरुआत क्यों और कहां से हुई होगी? इंडिया फ्रेंच को-प्रोडक्शन से बनी फिल्म ‘गर्ल्स विल बी गर्ल्स’ भारत की डायरेक्टर शुचि तलाटी की पहली फिल्म है। सनडांस फिल्म फेस्टिवल में धूम मचा के यह फिल्म बीस सितंबर को इंग्लैंड में रिलीज होगी।

फिल्म की शुरुआत में ही समझ आ जाता है कि मीरा (प्रीति पाणिग्रही) और उसकी मां अनिला (कनि कुश्रुति) के बीच ठीक नहीं है। बोर्डिंग स्कूल में पढ़ती है मीरा और अपने स्कूल के इतिहास में पहली लड़की है, जो हेड प्रीफेक्ट बन जाती है। यहां से शुरू होता है वो सफर, जो बढ़ती उम्र के साथ मुश्किलें बढ़ाता है। अब सिर्फ पढ़ाई और क्लास में टॉप आना ही जरूरी नहीं होता है, खुद के शरीर से लेकर रिश्तों और जरूरतों की पेचीदगी मीरा की जिंदगी में उथल-पुथल मचा देती है।

पहले सीन से आखिरी तक कैमरा मीरा के आसपास ही रहता है।

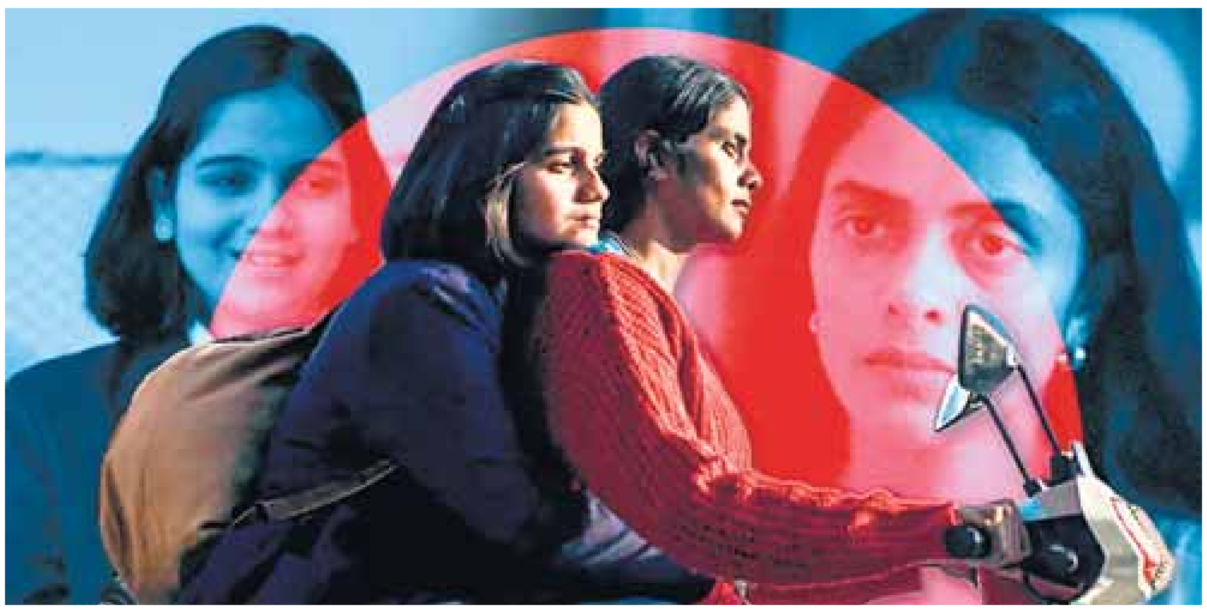

कभी पूरी स्क्रीन पर है और कभी थोड़ी आउट ऑफ फोकस, लेकिन प्रीति की मौजूदगी हर वक्त है और इतनी नजदीक से पड़ताल करते हुए कैमरे से उसका रिश्ता किसी भी पल नया नहीं महसूस होता है, बल्कि यूं लगता है कि किसी खांटी कलाकार को देख रहे हैं। कई ऐसे मौके हैं, जहां कुछ मुश्किल लेकिन जिंदगी की सच्चाई हैं और ऐसे मौकों पर डायरेक्टर बिलकुल भी नहीं झिझकते, बल्कि पूरी शिद्दत से उन्हें पेश करते हैं। शुचि के लिखे किरदारों से इसलिए भी रिश्ता बन जाता है, क्योंकि वो असल जिंदगी से उठ कर परदे पर आए हैं। मीरा पढ़ाई में अव्वल है, लेकिन उसमें कहीं न कहीं मां के लिए नाराज़ी है, मीरा में विद्रोह भी है और जिज्ञासा भी।

लेखक और निर्देशक शुचि ने किरदारों को इस तरह गढ़ा है, जो अपनी-अपनी जिंदगी में उन रास्तों पर चल रहे हैं, जो नए हैं। मीरा अपनी उम्र और श्री से अपने रिश्ते के साथ मां से रिश्ते नए ढंग से देख रही है, वहीं अनिला अपनी लड़की के साथ रिश्ते को संभालने में लगी है। श्री नए देश, नए स्कूल में अपनी जमीन और आसमान खोज रहा है। यह फिल्म ईमानदार कोशिश है, जो ज़िंदा है।